बीओआई

वार्ता

बैंक ऑफ़ इंडिया की तिमाही हिंदी गृहपत्रिका

दिसंबर, 2023

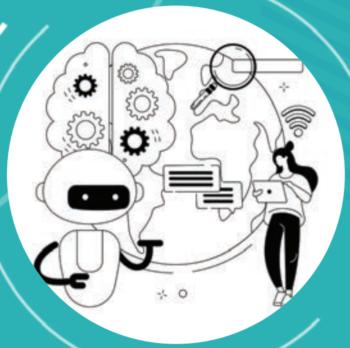

बैंक ऑफ़ इंडिया

रिश्तों की जमापूँजी

माननीय प्रबंध निदेशक एवं मुख्य कार्यपालक अधिकारी का सिंगापुर शाखा का दौरा

माननीय प्रबंध निदेशक एवं मुख्य कार्यपालक अधिकारी श्री रजनीश कर्नाटक ने दिनांक 21.11.2023 को बैंक की सिंगापुर शाखा का दौरा किया। इस दौरान वह सिंगापुर स्थित भारतीय उच्चायोग भी गए तथा वहाँ भारतीय उच्चायुक्त से भी मिले। उन्होंने ग्राहकों के साथ हुई बैठक में भाग लिया तथा सिंगापुर में तैनात बैंक के सभी पदाधिकारियों का मार्गदर्शन भी किया।

संरक्षक

श्री सुब्रत कुमार

कार्यपालक निदेशक

मार्गदर्शक

श्री अभिजीत बोस

मुख्य महाप्रबंधक

प्रधान संपादक

श्री प्रमोद कुमार द्विवेदी

महाप्रबंधक

उप प्रधान संपादक

सुश्री मऊ मैत्रा

सहायक महाप्रबंधक (राजभाषा)

संपादक मंडल

श्री एस चंद्रशेखर, मुख्य प्रबंधक (राजभाषा)

श्री पुनीत सिन्हा, मुख्य प्रबंधक

डॉ. पीयूष राज, मुख्य प्रबंधक (राजभाषा)

श्री परवेश कुंडू, प्रबंधक (राजभाषा)

यह आवश्यक नहीं कि पत्रिका में छपे लेखों में व्यक्त विचार बैंक के हों।

प्रधान संपादक,
बैंक ऑफ़ इंडिया, प्रधान कार्यालय,
राजभाषा विभाग, स्टार हाउस, जी-5, जी ब्लॉक,
बांद्रा-कुर्ला कॉम्प्लेक्स, बांद्रा (पूर्व)
मुंबई - 400 051

विषय-सूची

ग्राहक सेवा में उत्कृष्टता 07

ईज़ (ईएएसई) कार्यक्रम और वित्तीय सेवाओं का डिजिटलीकरण 10

अंतरिक्ष में मानव या मानव में अंतरिक्ष 13

लघु कथा: नन्हा सा रिश्ता.... 17

“डिजिटल दुनिया का साइबर स्पेस” 19

बैंक ऑफ इंडिया परिवार के संग 25 वर्षों की रिश्तों की जमापूंजी 22

भारत में खेलों का भविष्य 24

कहानी: “पढ़ेगी मेरी निम्मो” 26

यात्रा वृत्तांत: धर्मशाला : पर्वतों के बीच शांति का निवास स्थान 29

पुस्तक समीक्षा: “कितने पाकिस्तान” 32

वित्तीय प्रोद्योगिकी (फिनटेक) के आज और कल का आकलन 35

कुछ रोचक बातें... 38

अंतिम पृष्ठ की पेंटिंग श्रीमती पल्लबी हाल्दर सेन द्वारा एक्रिलिक कलर में 16”x20” के कैनवास बोर्ड पर बनाई गई वॉटर पेंटिंग है।

प्रबंध निदेशक का संदेश

प्रिय साथियों,

बीओआई वार्ता के इस नए अंक के माध्यम से आप सभी से संवाद करना मेरे लिए हर्ष का विषय है। वित्तीय वर्ष' 24 की तीसरी तिमाही के परिणाम हमारे सामने हैं। हमारा निवल लाभ वर्ष-दर-वर्ष 62% की वृद्धि के साथ ₹ 1870 करोड़ रहा है। हमारे कुल वैश्विक कारोबार में वर्ष-दर-वर्ष 9.60% की वृद्धि हुई है और यह ₹ 12,72,887 करोड़ हो गया है। यह अवधि आस्ति गुणवत्ता में सुधार तथा अग्रिमों में वृद्धि की दृष्टि से महत्वपूर्ण रही है। कुल अग्रिमों में वर्ष-दर-वर्ष 11.29% तथा रैम अग्रिमों में वर्ष-दर-वर्ष 13.61% वृद्धि हुई है। कुल एनपीए में वर्ष-दर-वर्ष 231 बीपीएस तथा निवल एनपीए में 20 बीपीएस की कमी आई है।

बैंक के कारोबार में निरंतर वृद्धि के लिए सभी स्टाफ सदस्य बधाई के पात्र हैं। मौजूदा वित्तीय वर्ष की अंतिम तिमाही में हमें बैंक की आस्ति गुणवत्ता को सुधारने के लिए वसूली पर निरंतर परिश्रम करना होगा तथा बैंक की लाभप्रदता को बढ़ाने के लिए कासा एवं रिटेल टीडीआर में वृद्धि पर ध्यान केन्द्रित करना होगा। हमें वित्तीय वर्ष की समाप्ती तक जमाराशियों और अग्रिमों में अधिक से अधिक वृद्धि करते हुए ₹ 13 लाख करोड़ के कुल मिश्रित कारोबार के लक्ष्य को प्राप्त करना है।

हम अपने ग्राहकों की सांस्कृतिक एवं भाषाई विविधता का सम्मान करते हुए, बैंक की वेबसाइट एवं मोबाइल ऐप की विषयवस्तु को अनेक भारतीय भाषाओं में उपलब्ध करवा रहे हैं। आज़ादी के अमृत काल में अपने देश की समृद्ध सांस्कृतिक एवं भाषाई विरासत को महत्व देते हुए, हमने देश के सभी समुदायों तक बैंकिंग सुविधाओं की पहुँच सुनिश्चित की है।

राजभाषा हिन्दी के कार्यान्वयन में हमारा बैंक हमेशा अग्रणी रहा है। सभी स्टाफ सदस्यों को अपने दैनिक कामकाज में हिन्दी के प्रयोग में निरंतर वृद्धि सुनिश्चित करनी है। राजभाषा कार्यान्वयन के क्षेत्र में भारत सरकार की अपेक्षाओं को पूरा करना हमारा कर्तव्य है। ग्राहकों को उनकी भाषाओं में बैंकिंग सेवाएँ उपलब्ध करवाने से बैंक के प्रति ग्राहकों के विश्वास में वृद्धि होती है और ग्राहकों का बैंक से रिश्ता अधिक गहन होता है। मुझे पूर्ण विश्वास है कि हम मौजूदा वित्तीय वर्ष में कारोबार के सभी लक्ष्यों को प्राप्त करके बैंकिंग क्षेत्र में नए कीर्तिमान स्थापित करेंगे।

शुभकामनाओं सहित,

भवदीय,

रजनीश

(रजनीश कर्नाटक)

कार्यपालक निदेशक का संदेश

प्रिय साथियो,

'बीओआई वार्ता' के इस अंक के सफल प्रकाशन के लिए संपादकीय टीम प्रशंसा की पात्र है। जब भी मैं इस पत्रिका को पढ़ता हूँ तो स्टार परिवार के सदस्यों की प्रतिभा को देखकर भावविभोर हो जाता हूँ। इस अंक में प्रकाशित कविताएं, लेख, कहानियाँ व अन्य सभी साहित्यिक विधाएँ आपके प्रतिभासम्पन्न होने का प्रमाण हैं। 'बीओआई वार्ता' के अंतिम पृष्ठ पर छपने वाली पेंटिंग्स एक बैंकर के उस दृढ़ जज्बे का साक्ष्य है जो व्यस्त दिनचर्या के बावजूद भी अपने शौक पूरे करने और हुनर को तराशने की काबिलियत रखता है। लेखन के विषय में कहते हैं कि यह एक ऐसा कौशल है, जो मानवीय अनुभवों को अमूर्त आस्ति से परिवर्तित करके मूर्त आस्ति बना देता है और लिखने से हमारा व्यक्तित्व भी परिष्कृत एवं परिमार्जित होता है। इसलिए हमें अपने अनुभवों या विभिन्न परिस्थितियों के संबंध में अपनी अंतर्दृष्टियों (इनसाइटस्) को लिखकर एक मूर्त आस्ति के रूप में सहेजना चाहिए।

हमारे बैंक में राजभाषा के प्रचार प्रसार में 'बीओआई वार्ता' का योगदान हमेशा से महत्वपूर्ण रहा है। यह एक ऐसा मंच है जहां स्टार परिवार के सदस्य के रूप में हम बैंकिंग से इतर भी अपने विचारों को साझा कर सकते हैं। समय के साथ बढ़ती पेशेवर प्रतिस्पर्धा और तकनीकी विकास ने हमें कामकाजी भागदौड़ में अत्यधिक व्यस्त कर दिया है और बैंकिंग तो अत्यावश्यक सेवा उपलब्ध करवाने वाले उद्योगों में से एक है। इसलिए एक इंसान से रूपांतरित होकर केवल एक उत्कृष्ट पेशेवर बनने की बजाय, एक उत्कृष्ट पेशेवर के रूप में एक बेहतर इंसान बन हमारा लक्ष्य होना चाहिए। बैंक अपने स्टाफ सदस्यों को गृहपत्रिकाओं, विभिन्न त्योहारों- सांकृतिक कार्यक्रमों, प्रतियोगिताओं आदि के माध्यम से मानवीय जीवन के बहुआयामी पहलुओं को उजागर करने के अवसर नियमित रूप से उपलब्ध करवाता है। हमारे बैंक का तो मंत्र ही है "रिश्तों की जमापूंजी", इसलिए हमें इन सभी प्लेटफॉर्म का अधिक से अधिक उपयोग करना चाहिए। अत: हम यदि अपने कारोबार के दौरान भी मानवीय पहलुओं और ग्राहक के साथ रिश्तों को महत्व देंगे, कारोबार की वृद्धि में भी उसका असर स्पष्ट दिखाई पड़ेगा। मैं उम्मीद करता हूँ कि इस पत्रिका के प्रकाशन में संपादक मंडल ने जो मेहनत की है वह रंग लाएगी और आप सभी को 'बीओआई वार्ता' का यह अंक पसंद आएगा।

आप सभी से मौजूदा वित्तीय वर्ष की अंतिम तिमाही में उत्कृष्ट कार्यनिष्पादन के लिए आग्रह करते हुए मैं अपनी शुभकामनाएँ प्रेषित करता हूँ ....

भवदीय,

सुब्रत कुमार

(सुब्रत कुमार)

प्रधान संपादक की कलम से

प्रिय साथियो,

कोई भी कार्य जब हम शुरू करते हैं तो उसे पूरा करने की यात्रा बहुआयामी अनुभवों से भरी होती है, इसलिए कार्य के पूर्ण हो जाने पर संतुष्ठि का एक भाव स्वत: हमारे मन में प्रस्फुटित होता है। आज बैंक की हिन्दी गृह पत्रिका 'बीओआई वार्ता' का यह अंक आपके सम्मुख प्रस्तुत करते हुए संतुष्टि की यही भावना मुझे भारहीनता का अनुभव करा रही है। 'बीओआई वार्ता' स्टार परिवार के सदस्यों के लिए साहित्यिक अभिव्यक्ति का साधन बनने के साथ-साथ राजभाषा के प्रचार-प्रसार का माध्यम भी है। अलग-अलग विषयों में रूचि रखने वाले पाठकों को ध्यान में रखते हुए, पत्रिका के इस अंक में विविध विषयों यथा बैंकिंग, तकनीक, खेल, स्वास्थ्य, यात्रा वृतांत, पुस्तक समीक्षा, व्यंग्य, कहानी और काव्य को शामिल किया गया है। पाठकों से प्राप्त प्रतिक्रियाएँ हमें स्तरीय साहित्य को प्रकाशित करने के लिए निरंतर प्रेरित करती हैं। हमारा आत्मविश्वास तब और अधिक प्रबल हो जाता है जब प्रबुद्ध शीर्ष प्रबंधन हमारा मार्गदर्शन करते हुए, पत्रिका को उत्कृष्ट बनाने के लिए अपने बहुमूल्य सुझावों से संपादकीय टीम का मनोबल बढ़ाता है। हमारे बीओआई परिवार में बैंकिंग एवं अन्य समसामयिक विषयों पर सृजनशील साहित्य भेजने वाले स्टाफ सदस्य ही वास्तव में गृह पत्रिका के सफल प्रकाशन हेतु धन्यवाद के पात्र हैं। बैंक के सभी प्रतिभावान साथियों से आग्रह करता हूँ कि 'बीओआई वार्ता' की विषयवस्तु को और अधिक ज्ञानवर्धक एवं आकर्षक बनाने के लिए अपने विचारों, अनुभवों और रचनाओं के माध्यम से इसी प्रकार निरंतर सहयोग करते रहें।

उम्मीद करता हूँ कि 'बीओआई वार्ता' का यह अंक आपके लिए सुपाठ्य, सुपाच्य एवं ज्ञानवर्धक होगा। इस अंक के बारे में आपकी बहुमूल्य प्रतिक्रियाएँ पाने की हमें हार्दिक अभिलाषा है। आपके बहुमूल्य विचार ही हमें और अधिक सृजनशील बनाने के लिए उत्प्रेरक का कार्य करते हैं। अत: आप अपनी प्रतिक्रियाओं से हमें अवश्य अवगत करवाएँ।

भवदीय,

(प्रमोद कुमार द्विवेदी)

अपने विभाग को जानिए श्रृंखला - ग्राहक श्रेष्ठता शाखा बैंकिंग विभाग

ग्राहक सेवा में उत्कृष्टता

डॉ. ओम प्रकाश लाल
सहायक महाप्रबंधक
ग्राहक श्रेष्ठता शाखा बैंकिंग विभाग
प्रधान कार्यालय

प्रधान कार्यालय में महाप्रबंधक की देखरेख में ग्राहक श्रेष्ठता शाखा बैंकिंग विभाग (CEBB) कार्यरत है जिसका मूल कार्य ग्राहक की शिकायतों का समयानुसार तथा सही ढंग से निवारण करना है। उत्कृष्ट ग्राहक सेवा प्रदान करना तथा ग्राहकों को हो रही असुविधा को दूर करना, किसी भी सेवा प्रदान कर रही संस्था का मूल मंत्र है। बैंक को विभिन्न माध्यमों से शिकायत प्राप्त होती है तथा विभाग द्वारा उनका समयानुसार तथा यथोचित निवारण किया जाता है। शिकायतें बैंक की वैबसाइट पर ओसीआरएम पैकेज से, ग्राहक से सीधे ईमेल/ पत्र के माध्यम से, सीपीग्राम के माध्यम से, बैंकिंग लोकपाल (Ombudsman) से, वित्त मंत्रालय तथा राज्य सरकार के माध्यम से प्राप्त होती हैं। विभाग द्वारा ग्राहक सेवा पर आरबीआई मास्टर परिपत्र के अनुसार प्रत्येक तिमाही ग्राहक सेवा बैठक का आयोजन किया जाता है। विभाग बैंकिंग लोकपाल से संबन्धित सभी कार्यों तथा आंतरिक लोकपाल से संबन्धित कार्य की देखभाल करता है। विभाग द्वारा प्रत्येक तिमाही बोर्ड की ग्राहक सेवा समिति के समक्ष ग्राहक सेवा तथा शिकायत निवारण तंत्र की व्यापक समीक्षा प्रस्तुत की जाती है। साथ ही प्राप्त शिकायतों का विश्लेषण किया जाता है तथा संबन्धित विभाग से इस संबंध में चर्चा की जाती है। विभाग स्पष्ट नीतियों के तहत कार्य करता है तथा बैंक की छवि को बेहतर बनाने हेतु निरंतर प्रयत्नशील है।

हमारे बैंक की ग्राहक शिकायत निवारण नीति को ग्राहक सेवा पर नियामक दिशानिर्देशों के अनुरूप औपचारिक रूप दिया गया है। पूरे संगठन में इसी नीति के अनुरूप मानक संचालन प्रक्रिया कार्य करती है यथा

- ग्राहकों की शिकायतों का समाधान करना;
- उचित वितरण और समीक्षा तंत्र के माध्यम से ग्राहकों की शिकायतों और समस्याओं को कम करने का लक्ष्य;
- ग्राहकों की शिकायतों का त्वरित निवारण सुनिश्चित करना।
- विनम्र और समर्पित ग्राहक सेवा के साथ उत्कृष्टता की भावना लाना

सभी स्टाफ सदस्य हमारी ग्राहक सेवा नीति के तहत सौंपी गई भूमिकाओं और जिम्मेदारियों से अच्छी तरह वाकिफ हैं और बैंक द्वारा परिकल्पित सिद्धांतों का पालन करने के लिए प्रतिबद्ध हैं। प्रमुख मौलिक सिद्धांत निम्न अनुसार हैं :-

- ग्राहकों के साथ हर समय उचित व्यवहार किया जाए।
- ग्राहकों द्वारा की गई शिकायतों को शिष्टाचारपूर्वक और समय पर निपटाया जाए
- सभी शिकायतों का कुशलतापूर्वक और निष्पक्षता से समाधान किया जाए ।
- हमारे कर्मचारी पूर्ण विश्वास के साथ और ग्राहकों के हितों पर प्रतिकूल प्रभाव डाले बिना काम करें
- ग्राहकों को अपनी शिकायतों को आगे बढ़ाने के तरीकों और वैकल्पिक समाधान के उनके अधिकारों के बारे में पूरी जानकारी दी जाए।
- समस्त एडवाइजरी एक विशिष्ट समयसीमा के भीतर निपटाई जाए।

बेहतर बैंकिंग अनुभव के लिए कदम

- सार्वजनिक और निजी वेतनभोगी व्यक्तियों, सशस्त्र बलों, अर्ध-सैन्य बलों, वरिष्ठ नागरिकों, पेंशनभोगियों, महिलाओं, छात्रों, डायमण्ड ग्राहकों जैसे विभिन्न श्रेणियों को कवर करने वाले विभिन्न ग्राहक केंद्रित बचत खाता धारकों के लिए मुफ्त बीमा कवर।
- गो ग्रीन सेल: इस सेल का गठन हमारे साथ किसी भी खाते वाले विशेषाधिकार प्राप्त ग्राहकों को पंजीकृत ईमेल आईडी के माध्यम से समय-समय पर विवरण प्रदान करने के लिए किया गया था।
- जनसमर्थ पोर्टल: हमारा बैंक अब विभिन्न ऋण उत्पादों के लिए लीड उत्पन्न करने और सेवा प्रदान करने के लिए जनसमर्थ पोर्टल में भाग ले रहा है।
- डोर स्टेप बैंकिंग: हमारा बैंक वित्त मंत्रालय द्वारा 10.09.2020 को शुरू की गई डोर स्टेप बैंकिंग (डीएसबी) में भाग ले रहा है। बैंक ऑफ इंडिया 23 राज्यों और 4 केंद्रशासित प्रदेशों में 1169 शाखाओं को कवर करते हुए देश भर के चयनित 100 प्रमुख केंद्रों में अपने सभी ग्राहकों को डोरस्टेप बैंकिंग सेवाएं प्रदान करने वाले बड़े सार्वजनिक क्षेत्र के अग्रणी बैंकों में से एक है।
- पीएसबी एलायंस ने अतिरिक्त 1000 केंद्रों तक डीएसबी सेवाओं के विस्तार के पहले चरण की प्रक्रिया पूरी कर ली है और यह जनवरी 2024 तक सक्रिय हो जाएगी। हमारी 766 केंद्रों में 913 शाखाएं हैं जो जनवरी 2024 तक डीएसबी के लिए सक्रिय हो जाएंगी। विस्तार के पहले चरण के पूरा होने के बाद हमारे बैंक की 866 केंद्रों में 2092 शाखाएं डीएसबी सक्षम होंगी और वे डोरस्टेप बैंकिंग सेवाएं प्रदान करेंगी।
- व्यवसाय प्रतिनिधि: बैंक ने व्यवसाय प्रतिनिधियों के माध्यम से बैंकिंग सेवाएं उपलब्ध कराई हैं। वर्तमान में पूरे भारत में 15,000 से अधिक बीसी पंजीकृत हैं जो 39 प्रकार की बैंकिंग सेवाएं प्रदान करते हैं

ग्राहक जागरूकता

- हर साल हम केंद्रीय सतर्कता आयुक्त के तत्वावधान में सक्रिय रूप से सतर्कता जागरूकता सप्ताह मनाते हैं। इस वर्ष भी 30 अक्टूबर से 5 नवंबर 2023 तक ऐसा ही किया गया। इसके तहत शाखाओं/कार्यालयों में ग्राहक बैठकें आयोजित की गईं। ऐसी ग्राहक बैठकों के दौरान मुख्य मुद्दे निम्नलिखित है:
    - ♦ ग्राहकों को उनके अधिकारों और जिम्मेदारियों के बारे में जागरूक करना;
    - ♦ ग्राहकों को आंतरिक लोकपाल नीति के साथ आरबीआई की एकीकृत लोकपाल योजना के बारे में जागरूक करना
    - ♦ ग्राहकों को हमारी आंतरिक शिकायत निवारण प्रणाली के बारे में जागरूक करना

स्टाफ प्रेरणा

- उपर्युक्त ग्राहक केंद्रित पहलों के अलावा, हम जमीनी स्तर पर वरिष्ठ प्रबंधन कर्मचारियों/अधिकारियों के दौरों के माध्यम से अपने स्टाफ सदस्यों को संवेदनशील बनाने के लिए कदम उठा रहे हैं:
- शाखाओं में कामकाज संभालने वाले युवा कर्मचारियों को प्रेरित और शिक्षित करते हैं।
- काउंटरों पर ग्राहक प्रबंधन के व्यावहारिक पहलुओं और अवधारणाओं को प्रदर्शित करते हैं।
- शाखाओं में ग्राहकों से उनकी प्रतिक्रिया/सुझाव/दृष्टिकोण जानने के लिए बातचीत करते हैं।
- मुस्कुराहट (स्माइल) के साथ अपने कर्तव्यों का पालन करते हुए उत्कृष्टता लाने के लिए ग्राहक सेवा के उच्च मानकों को बनाए रखने के लिए कर्मचारियों की सराहना करते हैं

हमारी कार्यप्रणाली के प्रमुख बिंदु

- स्टार संपर्क (सीआरएम नेक्स्ट) हमारे ग्राहक शिकायत निवारण तंत्र की रीढ़ है। स्टार संपर्क के माध्यम से आने वाली प्रत्येक शिकायत की एक विशिष्ट आईडी होती है, जिसे शिकायत दर्ज होने के तुरंत बाद पंजीकृत मोबाइल नंबर और ईमेल आईडी के माध्यम से ग्राहक को भेज दिया जाता है। ग्राहक इस विशिष्ट आईडी के साथ स्थिति को ऑनलाइन ट्रैक करने में सक्षम है और समाधान होने तक अपनी शिकायत का परिणाम देख सकता है। शिकायत/शिकायत के समाधान पर ग्राहक को एक एसएमएस/ईमेल भी भेजा जाता है।
- सीपीग्राम्स/इनग्राम्स/बैंकिंग लोकपाल के माध्यम से आने वाली शिकायतों पर ध्यान देने के लिए विशेष नोडल अधिकारी हैं। हम 30 दिनों की निर्धारित अवधि हेतु शिकायतों के लिए सीपीजीआरएएम में शून्य लंबितता बनाए रख रहे हैं।
- हमारे बैंक में महाप्रबंधक स्तर का मुख्य शिकायत निवारण अधिकारी है जो समर्पित अधिकारियों की एक मजबूत टीम द्वारा समर्थित ग्राहक उत्कृष्टता के लिए विशेष कार्यक्षेत्र का प्रमुख है।
- हमारे बैंक का कॉल सेंटर नवी मुंबई के ऐरोली और हैदराबाद के बेगमपेट से 24x7x365 आधार पर संचालित होता है। कॉल सेंटर ग्राहक शिकायत निवारण के लिए एक महत्वपूर्ण उपकरण है और ग्राहकों की सुविधा के लिए व्यापक आईवीआर सुविधा से सुसज्जित है।
- डीएफएस के निर्देशों के अनुसार, ग्राहक शिकायत निवारण दिवस हर महीने एक विशिष्ट दिन पर शाखाओं / प्रशासनिक कार्यालयों में मनाया जा रहा है, ताकि ग्राहकों की शिकायतों को तेजी से तथा हर संभव तरीके से हल किया जा सके।
- प्रतिदिन प्राप्त होने वाली शिकायतों की औसत संख्या 634 है, जिसका औसत टीएटी 5.51 दिन है। 30.09.2023 तक, केवल 726 शिकायतें समाधान के लिए लंबित थीं।
- स्टार ग्राहक संवाद - विभिन्न उत्पादों और सेवाओं पर ग्राहक संतुष्टि स्तर का आकलन करने के लिए बाहरी एजेंसी के माध्यम से सालाना ग्राहक प्रतिक्रिया और सुझाव सर्वेक्षण आयोजित किया जाता है। पिछले वर्ष इस सर्वेक्षण के तहत ग्राहक संतुष्ठि सूचकांक स्कोर 72.90 था।
- गिफ्ट सिटी के तहत गांधीनगर में एनआरआई की सेवाओं को पूरा करने के लिए एक समर्पित सहायता केंद्र स्थापित किया गया है।
- हम किसी भी स्तर पर कर्मचारियों के दुर्व्यवहार के संबंध में नो टॉलरेंस पॉलिसी का पालन करते हैं। इसके लिए, प्रशिक्षण पाठ्यक्रमों के दौरान ग्राहक सेवा पर विशेष सत्र लिए जाते हैं ताकि फ्रंट लाइन स्टाफ के बीच जागरूकता पैदा की जा सके। हम अपने कर्मचारियों के लिए एक प्रमाणन पाठ्यक्रम शुरू करने का प्रस्ताव रखा हैं, ताकि सभी स्तरों पर ग्राहक मामलों को संभालने के दौरान दक्षता और कौशल विकसित किया जा सके।
- ग्राहक सशक्तिकरण को बढ़ावा देने के लिए, वन टच पॉइंट की अवधारणा लाई गई है। ग्राहकों की सभी शिकायतों को संभालने और उन्हें तुरंत हल करने का प्रयास करने के लिए बैंक की प्रत्येक शाखा में SPOC (सिंगल पॉइंट ऑफ़ कॉन्टैक्ट) शुरू किया गया है।
- वरिष्ठ नागरिकों/शारीरिक रूप से विकलांग ग्राहकों और कर्मचारियों के दुर्व्यवहार की शिकायतों पर ध्यान देने के लिए प्रधान कार्यालय में एक अलग डेस्क रखा गया है।
- पेंशनभोगियों की शिकायतों के समय पर निवारण के लिए सीपीपीसी नागपुर में एक समर्पित सेल है।
- EASE 6.0 आवश्यकताओं के अनुसार, हम शाखा में आने वाले ग्राहकों के लिए फीडबैक कैप्चरिंग मैकेनिज्म के तहत 14 सेवाओं को लागू करने की प्रक्रिया में हैं, जिनमें से 3 को पहले ही सफलतापूर्वक लागू किए जा चुके हैं।

ईज़ (ईएएसई) कार्यक्रम और वित्तीय सेवाओं का डिजिटलीकरण

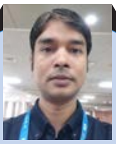

सुमित वर्मा
वरिष्ठ प्रबंधक
मानव संसाधन विभाग
प्रधान कार्यालय

ईएएसई (एनहैन्स्ड एकसेस एंड सर्विस एक्सलेंस) - उन्नत पहुँच और उत्कृष्ट सेवा प्रदान करना

भारत की वित्त मंत्री श्रीमती निर्मला सीतारमण का कथन है:

"अर्थव्यवस्था रूपी शरीर में वित्तीय सेवाएँ उपलब्ध करवाने के लिए बनी बैंकिंग व्यवस्था रीढ़ की तरह होती है, जिसके बलबूते विकास की धड़कनें चलती रहती हैं, कारोबार और वाणिज्य को वित्तपोषण रूपी रक्त सींचता रहता है, भावी पीढ़ियों के लिए बैंकिंग का भविष्य डिजिटल ही नहीं अपितु एआई आधारित भी है। ईज़ रिफ़ोर्म बैंकों को अधिक चुस्त, कुशल और ग्राहक केन्द्रित बनाने के लिए डिजाइन किए गए हैं।"

ईज़ (EASE) प्रोग्राम अर्थात् एन्हांस्ड एक्सेस एंड सर्विस एक्सीलेंस प्रोग्राम को जनवरी 2018 में, भारत सरकार और सार्वजनिक क्षेत्र के बैंकों (पीएसबी) ने रिफॉर्म्स एजेंडा के रूप में लॉन्च किया था। इसे इंडियन बैंक्स एसोसिएशन द्वारा कमीशन किया गया था और बोस्टन कंसल्टिंग ग्रुप द्वारा ड्राफ्ट किया गया था। ईज़ एजेंडा का लक्ष्य स्वच्छ और स्मार्ट बैंकिंग के लक्ष्य को हासिल करना है। ईज़ के अंतर्गत 120 से अधिक वस्तुनिष्ठ संकेतकों पर आधारित सुधार सूचकांक का उपयोग करते हुए प्रत्येक बैंक के कार्यनिष्पादन का मूल्यांकन किया जाता है और यह एक पारदर्शी ग्रेडिंग व्यवस्था के अनुसार कार्य करता है जो बैंकों को उनकी क्षमता और सुधार के क्षेत्रों की पहचान करने में सक्षम बनाता है। इसका उद्देश्य बैंकों के बीच स्वस्थ प्रतिस्पर्धा को बढ़ावा देना और डेटा एनालिटिक्स, ऑटोमेशन तथा डिजिटलीकरण पर जोर देकर आधुनिकीकरण की ओर अग्रसर करना है। इसके माध्यम से अगली पीढ़ी के सुधारों को अपनाकर लाभप्रदता, संपत्ति की गुणवत्ता, ग्राहक सेवा और डिजिटल क्षमताओं में उन्नयन किया जा रहा है। ईज़ के तहत सबसे अधिक प्रगति बैंकिंग सेवाओं के डिजिटलीकरण की दिशा में हुई है। वित्तीय सेवाओं का डिजिटलीकरण बड़ी संख्या में लोगों तक पहुंच बढ़ाने, बैंक के वित्तीय उत्पादों का प्रसार करने और भावी ग्राहकों के साथ जुड़ने की एक शक्तिशाली कार्यनीति है। वित्तीय सेवा उद्योग में विश्वास सर्वोपरि होता है। सृजनशील, नियमबद्ध डिजिटलीकरण के माध्यम से बैंक को ग्राहकों से जुड़ने और कारोबार वृद्धि करने में मदद मिलती है।

ईज़ कार्यक्रम को अलग-अलग क्रमगत चरणों में लागू किया जा रहा है। पहले चरण, ईज़ 1.0 में अनर्जक आस्तियों (एनपीए) को पारदर्शी ढंग से नियंत्रित करने की कार्यनीति को लागू किया गया। इस कार्यनीति के परिणामस्वरूप एनपीए में उल्लेखनीय सुधार हुआ। दूसरे चरण, ईज़ 2.0 में पहले चरण की एनपीए सुधार मुहिम को जारी रखते हुए बैंकिंग प्रक्रियाओं और प्रणालियों में सुधार करने, वित्तीय समावेशन को बढ़ावा देने की कार्यनीति पर अमल किया गया। तीसरे चरण, ईज़ 3.0 में आधुनिक एवं अगली पीढ़ी की तकनीक को बैंकिंग सेवाओं में तेजी से लागू करने की दिशा में कार्य किया गया। इसके तहत बैंकिंग सुविधाओं के डिजिटलीकरण पर विशेष रूप से ज़ोर दिया गया। वर्तमान में ईज़ के अंतर्गत चौथे चरण, ईज़ 4.0 की कार्यनीतियों को लागू किया जा रहा है। चौथे चरण में तीसरे चरण के विज़न को विस्तार देकर कॉ-लेंडिंग, डिजिटली पूर्व-अनुमोदित ऋण प्रोसेसिंग प्रणाली, कृषि, एमएसएमई एवं रिटेल बैंकिंग में विश्लेषण आधारित वित्तपोषण के डिजिटलीकरण को कार्यान्वित किया जा रहा है।

बैंकिंग क्षेत्र में ईज़ (उन्नत पहुंच और सेवा उत्कृष्टता) के कार्यान्वित होने से निस्संदेह क्रांतिकारी परिवर्तन हुए हैं, लेकिन यह डगर बहुत कठिन चुनौतियों से भरी हुई रही है। ईज़ फ्रेमवर्क को अपनाने में बैंकों के सामने आने वाली प्रमुख बाधाओं में से एक मौजूदा सिस्टम को उन्नत प्रौद्योगिकी ढांचे के साथ संरेखित करने के

लिए आवश्यक जटिल एकीकरण प्रक्रिया को अंजाम देने का काम था, जिसे पूरा करने में सार्वजनिक क्षेत्र के बैंकों को बहुत मशक्कत करनी पड़ी और यह प्रक्रिया अभी भी जारी है। पारंपरिक बैंकिंग की परिचालनगत व्यवस्था में गहराई से समाहित प्रणाली के कारण नवीन सुविधाओं के साथ तालमेल संबंधी समस्याएं आई। इसके लिए एक सावधानीपूर्ण और समय लगने वाले परिवर्तन से गुजरना पड़ रहा है, क्योंकि भारत जैसी जटिल एवं विशाल अर्थव्यवस्था में निर्बाध बैंकिंग सेवाएँ देते हुए, परिचालन निरंतरता के साथ डिजिटल विकास को आत्मसात करना बहुत जटिल कार्य है। ईज़ के कार्यान्वयन के दौरान बैंकों के सामने आने वाली वित्तीय चुनौतियों में सबसे प्रमुख चुनौती सिस्टम को अपग्रेड करने और स्टाफ प्रशिक्षण से जुड़ी लागत है। सुरक्षा की दृष्टि से सबसे महत्वपूर्ण चुनौती साइबर सुरक्षा को दुरुस्त रखने की है और यह बैंक की साख से गहराई से जुड़ी हुई चुनौती है। ईज़ में लागू किए गए परिष्कृत डिजिटल चैनलों से विभिन्न सतहों पर साइबर खतरों की संवेदनशीलता बढ़ जाती है। बैंकों को ग्राहक डेटा और वित्तीय लेनदेन की सुरक्षा के लिए मजबूत साइबर सुरक्षा उपायों में बहुत अधिक निवेश करना पड़ता है, साथ ही विकसित नियामकीय फ्रेमवर्क का अनुपालन भी सुनिश्चित किया जाना आवश्यक है। डिजिटल नवाचार और सुरक्षा के बीच यह संतुलन बनाए रखना एक नाज़ुक कड़ी है, जिससे कार्यान्वयन की प्रक्रिया स्वाभाविक रूप से चुनौतीपूर्ण हो जाती है। इनके अलावा, ग्राहक स्वीकृति और अनुकूलन एक उल्लेखनीय बाधा का प्रतिनिधित्व करता है। पारंपरिक बैंकिंग तरीकों के आदी पारंपरिक ग्राहकों को ईज़ के अंतर्गत हुआ परिवर्तन भयभीत या भ्रमित कर सकता है। बैंकों को ग्राहकों को नए डिजिटल इंटरफेस से परिचित कराने, अद्यतन प्रणालियों की सुरक्षा और दक्षता में विश्वास दिलाने के लिए व्यापक शैक्षिक अभियानों में निवेश करना पड़ता है।

ईज़ के कार्यान्वयन से बैंकों को अनेक लाभ हुए हैं, इसकी वजह से उन्हें डिजिटल नवाचार में अग्रणी रहने और उनकी परिचालन दक्षता एवं ग्राहक सेवा क्षमताओं में उल्लेखनीय वृद्धि हुई है। खाता प्रबंधन, लेनदेन प्रोसेसिंग और ग्राहक शिकायतों जैसे नियमित कार्यों के स्वचालन प्रक्रिया में आ जाने से परिचालन लागत में काफी कमी आई है और समग्र दक्षता में उल्लेखनीय वृद्धि हुई है। यह न केवल बैंकों को अधिक कार्यनीतिक क्षेत्रों में संसाधनों को पुन: आबंटित करने की सुविधा देता है बल्कि तीव्र और झंझटमुक्त सेवा भी सुनिश्चित करता है। ईज़ के कारण बेहतर ग्राहक अनुभव संभव हुआ है। ग्राहकों को एक सहज और सुविधाजनक बैंकिंग अनुभव उपलब्ध करवाते हुए, उन्नत डिजिटल इंटरफेस, स्वयं-सेवा विकल्प और व्यक्तिगत सेवाएं पेश करता है। डिजिटल चैनलों के माध्यम से सहजता से लेनदेन करने, खाते की जानकारी लेने और शिकायत समाधान प्राप्त करने की क्षमता, ग्राहकों की संतुष्टि और भरोसे को बढ़ाती है। मैन्युअल हस्तक्षेप कम होने और प्रक्रियाओं के सुव्यवस्थित होने, बैंक कर्मियों से लेकर कागज-आधारित परिचालन जैसी मदों में लागत कम होती है, जिससे बैंक का समग्र वित्तीय स्वास्थ्य सुधरता है और गतिशील बैंकिंग उद्योग में प्रतिस्पर्धात्मक स्तर पर आगे बढ़ने में सहायता करता हैं। उन्नत डेटा एनालिटिक्स क्षमताएं बैंकों को ग्राहक व्यवहार, प्राथमिकताओं और रुझानों के संबंध में महत्वपूर्ण इनसाइटस् उपलब्ध करवाती हैं। यह डेटा-संचालित दृष्टिकोण बैंकों को ग्राहकों की जरूरतों को बेहतर ढंग से पूरा करने के लिए अपनी सेवाओं, विपणन रणनीतियों और

उत्पाद पेशकशों को तैयार करने में सक्षम बनाता है, जिससे ग्राहक संबंध मजबूत होते है और कारोबार वृद्धि होती है। डिजिटलीकरण, रियल टाइम निगरानी से बेहतर जोखिम प्रबंधन की सुविधा भी प्रदान करता है। बैंक सक्रिय रूप से संभावित जोखिमों की पहचान कर सकते हैं और उन्हें कम कर सकते हैं, ग्राहक डेटा की सुरक्षा कर सकते हैं।

डिजिटल प्रगति को अपनाना न केवल एक कार्यनीतिक अनिवार्यता बन गया है, बल्कि वित्तीय उद्योग में निरंतर सफलता का एक प्रमुख चालक भी बन गया है। ईज़ कार्यान्वयन ने बैंकों को तकनीक-प्रेमी और दूरदर्शी संस्थानों के रूप में स्थापित किया है, जो युवा पीढ़ी को आकर्षित करता है, जो डिजिटल बैंकिंग की ओर तेजी से बढ़ रहा है। यह आधुनिकीकरण ऐसे ग्राहकों की संख्या में वृद्धि करता है जो तकनीकी रूप से अधिक उन्नत बैंकिंग अनुभव की इच्छा रखते हैं। इससे बैंक ग्राहकों को अनेक लाभ मिलते हैं, जिनमें पहुंच में वृद्धि और लेनदेन दक्षता से लेकर बढ़ी हुई सुरक्षा और वैयक्तिकृत सेवाएं शामिल हैं। जैसे-जैसे वित्तीय उद्योग डिजिटल युग में विकसित हो रहा है, ग्राहकों को एक परिवर्तनकारी बैंकिंग अनुभव मिल रहा है, जो उनकी आवश्यकताओं और अपेक्षाओं के अनुरूप है। हालांकि इसका कार्यान्वयन बैंकों के लिए चुनौतियों से रहित नहीं है। डिजिटल परिवर्तन की दौड़ में बैंकों द्वारा विरासत में मिली पारंपरिक प्रणाली की बाधाओं पर काबू पाना, साइबर सुरक्षा खतरों से निपटना, ग्राहक अनुकूलन का प्रबंधन करना और गतिशील नियामकीय परिदृश्यों को नेविगेट करना प्रमुख चुनौतियां हैं। इन चुनौतियों से सफलतापूर्वक पार पाने के लिए रणनीतिक योजना, पर्याप्त निवेश और तकनीकी चपलता के प्रति प्रतिबद्धता की आवश्यकता है।

स्वयं में सम्पूर्ण

कुदरत ने एक अक्स बनाया,
इक सोच जिसकी बनी परछाई,
हर खुशी डाली, सब मनोभाव भी डाले,
जो बनी शख्सियत उसे इंसान बताया ।
हर गुण था उसमें, हर सुर सुरीले,
हर रंग मे रंगे, हर हाल में शामिल,
पर कहीं किसी कोने में छिपाया खुद को,
भूला वो था, हर रूप में काबिल।
भूला उसने ज़मीर अपना,
बन गया वो, जो दूसरों ने बनाया,
रिश्ते भी ऐसे जो जंजीर बन गए,
फिर ढूँढा खुदको यहाँ-वहाँ।
रस्मों-रिवाजों, नियम-कानून से,
एक रूह दब गई जो आज़ाद थी ठहरी,
दिखावट की दुनिया में जीते जीते,
अपनी ही सोच पर लगाया पहरा।
खुशी को ढूंढ रहा दूसरों में,
जबकी खुद अंदर से दुखी है,
खुद को मारकर जीने से,
कहाँ कोई यहाँ सुखी है।
रात के अंधेरे से डर जाते,
बिजली से अंधेरे को मिटाते,
पर मन के अंधेरे का क्या,
जिसको समय के साथ बढ़ाते जाते।
बाहरी जगमग, बनावटों से,
हो रहा तू इतना प्रभावित,
जिसका कोई मोल नहीं,
कर रहा क्यों उसमें खुद को साबित।
सच की रोशनी से हो रोशन तू,
स्नेह एवं सदभाव के गुणों से परिपूर्ण,
स्वच्छ विचारों से भर मन अपना,
हो जा तू स्वयं में सम्पूर्ण।

अशोक कुमार जेना
उप आंचलिक प्रबंधक
भुवनेश्वर अंचल

अंतरिक्ष में मानव या मानव में अंतरिक्ष

यशपाल कटारिया
राजभाषा अधिकारी
बैंगलुरु आंचलिक कार्यालय

"अंतरिक्ष या ये कहें कि ब्रह्मांड, मानव रूपी विद्यार्थी के लिए कक्षा एवं खेल का मैदान दोनों है। एक प्रजाति के तौर पर अपने अस्तित्व के बारे में खोज करने, सीखने और विकास की ओर अग्रसर होने के लिए यह हमें लगातार आमंत्रित करता है। यह हमारे भीतर जिज्ञासा उत्पन्न करता है कि क्या सूदूर सितारों पर बैठी कोई और प्रजाति भी हमारी तरफ टकटकी लगाए हुए है? इसकी खामोशी में हमारे ये प्रश्न गूँजते हैं और उनका उत्तर अज्ञात में हमारा इंतज़ार कर रहा है...." - अज्ञात

दिनांक: 23 अगस्त 2023;

पूरा देश सांस थाम कर बैठा है। सबकी नजर चंद्रयान - 3 पर है। सब की एक ही मनोकामना कि वह चंद्रमा पर सफलतापूर्वक उतर जाए। चंद्रयान - 2 की विफलता के बाद इसका सफल होना और अधिक महत्वपूर्ण हो गया था।

समय 18:04; पुष्टि मिलती है कि चंद्रयान - 3 सफलतापूर्वक चंद्रमा पर लैंड कर चुका है। पूरे देश में हर्षोल्लास का वातावरण छा जाता है।

धरती पर बसते मनुष्य को सदैव रात्रि के आकाश ने आकर्षित किया है, यदि आकाश अमावस्या का हो तो आकर्षण और अधिक बढ़ जाता है। रात को जब चंद्रमा आकाश में नहीं होता तो सुदूर आकाश में केवल तारे ही देदीप्यमान होते हैं। धरती पर अनेक ऐसे स्थान हैं जहां रात्रि के आकाश में "औरोरा बोरियालीस" जैसे नज़ारे दिखाई देते हैं।

रात्रि आकाश, या कहे कि अन्तरिक्ष की व्याख्या अनेक बुद्धिजीवियों ने अपने-अपने तरीके से की है। सूर्य को तेज का देवता कहा गया है, तो चंद्रमा को शीतलता के देव की पदवी दी गई है। सूर्यऔर चंद्रमा के परिप्रेक्ष्य में यह सटीक भी है। देवता जो नि:स्वार्थ भाव से देता है, और उसके बदले में कुछ नहीं मांगता है। पृथ्वी ही एकमात्र ऐसा ग्रह है जिस पर जीवन है और जीवन की संभावनाओं को साकार करने में सूर्य का योगदान सर्वाधिक है।

विज्ञान ने जैसे-जैसे तरक्की की है, वैसे-वैसे रात्रि आकाश या फिर, अन्तरिक्ष को समझने में मनुष्य को सफलता मिली है। पहले-पहल यह माना जाता था कि पृथ्वी ब्रह्मांड के केंद्र में है और अन्य सभी इसकी परिक्रमा करते है किन्तु कालांतर में हुई अन्तरिक्ष संबंधी खोजों ने इस अवधारणा को गलत साबित किया है।

ब्रह्मांड के गर्भ में छुपे समस्त रहस्य तो कदाचित मानव जाति अपने पूरे अस्तित्व काल में भी उजागर न कर पाएगी। ब्रह्मांड इतना बड़ा है, इतना बड़ा है, कि इसे मापने में मनुष्य द्वारा बनाई गयी सारी व्यवस्थाएँ असफल हो जाती हैं। आइए एक उदाहरण के माध्यम से समझने का प्रयास करते हैं:

स्थानीय ग्रहों के मण्डल को सौर मण्डल कहा गया है। अंग्रेजी में सोलर सिस्टम कहते हैं। इसके केंद्र में सूर्य है और इससे बढ़ती दूरी के क्रम में ग्रह यथा बुध, शुक्र, पृथ्वी, मंगल, बृहस्पत, शनि, अरुण और अंत में वरुण है। मानव को ज्ञात सबसे तेज गति से चलने वाली वस्तु प्रकाश है और इसकी रफ्तार तीन लाख किलोमीटर प्रति सेकंड है। इतनी तीव्र गति के पश्चात भी, सूर्य के प्रकाश को पृथ्वी तक आने में लगभग आठ मिनट का समय लगता है।

सौरमंडलीय दूरी को मापने की इकाई प्रकाशवर्ष है। प्रकाश एक वर्ष में जितना फासला तय करता है, उस दूरी को एक प्रकाश वर्ष कहा जाता है। तथ्यों में प्रकाश एक वर्ष में 9.46 ट्रिलियन किलोमीटर की दूरी तय करता है।

इसके अतिरिक्त, सूर्य एक तारा है अर्थात् यह अपने प्रकाश से चमकता है और इसके सबसे निकट दूसरा तारा प्रोक्सिमा सेंटौरी है, जोकि हमारे सौरमंडल से 4.2 प्रकाश वर्ष दूर है।

सूर्य मिल्की-वे आकाशगंगा में स्थित है। नासा (संयुक्त राज्य अमेरिका की अन्तरिक्ष अन्वेषण एजेंसी) के अनुमान के अनुसार मिल्की-वे आकाशगंगा में लगभग 100 बिलियन तारे हैं।

एक अनुमान के अनुसार, ब्रह्मांड में 200 बिलियन से लेकर 2 ट्रिलियन आकाशगंगाए हो सकती हैं।

ब्रह्मांड के बारे में यह ज्ञान हमें विनम्र बना देता है कि ब्रह्मांड मनुष्य की कल्पना शक्ति से भी बड़ा है, यह अपने अंदर अनेक रहस्य समेटे हुए है। किन्तु यहाँ भी एक आश्चर्यजनक बात है। मनुष्य कितना ही दूरदर्शी बनने की चेष्टा करे, किन्तु किसी दूर की वस्तु को जानने की चाह में वह अनेक बार पास की अद्भुत वस्तुओं की अवहेलना कर देता है।

हमारे सबसे पास जो अद्भुत वस्तु है, वह हमारी पृथ्वी है। ज्ञात ब्रह्मांड में केवल यही एकमात्र ग्रह है जहां जीवन संभव है। और वह भी अनेक रूपों में है।

पृथ्वी: एक दृष्टि

पृथ्वी की आयु लगभग 4.5 बिलियन वर्ष है। पृथ्वी का जन्म कैसे हुआ, अर्थात यह गृह कैसे बना, इसके बारे में विज्ञान अभी तक संशय की स्थिति में है। इसके बारे में अनेक मत हैं, किन्तु वे कुछ ठोस नहीं। एक सिद्धान्त के अनुसार, सूर्य के निर्माण के पश्चात जो तत्व बच गए थे उन से पृथ्वी बनी। गुरुत्वाकर्षण से ये तत्व एक दूसरे के निकट आए, जिससे कंकड़ बने। कंकड़ से बड़े पत्थर और अंततोगत्वा पृथ्वी।

सौर मण्डल में पृथ्वी तीसरा ग्रह है। यह सूर्य से लगभग 15 करोड़ किलोमीटर दूर है, और यह दूरी आदर्श है - इसके कारण यह सूर्य का एक चक्कर 365 दिनों में पूरा करती है, जिसकी वजह से एक वर्ष की अवधि तय होती है। पृथ्वी अपने अक्ष पर 24 घंटे में एक चक्कर पूरा करती है, जो एक दिन की अवधि को निर्धारित करता है।

पृथ्वी पर पानी तीनों अवस्थाओं यथा ठोस, तरल और गैस में पाया जाता है और जहां जल है, वहाँ जीवन है। मानव शरीर भी 60 प्रतिशत पानी है।

पृथ्वी की सतह का 70 प्रतिशत हिस्सा पानी है, यह समुद्र, नदी आदि के रूप में है और अब तक लगभग 2 लाख समुद्री प्रजातियों को ढूंढ़ा गया है।

समुद्री जीव-जन्तु अपने जीवनयापन के लिए पूर्ण रूप से पानी पर निर्भर है। सतह पर रहने वाले जीव-जंतुओं के लिए भी पानी अनिवार्य है। मनुष्यों की भांति जानवर भी अपनी सभी चयापचय प्रक्रियाओं, रासायनिक प्रतिक्रियाओं, तापमान विनियमन आदि के लिए पानी पर निर्भर रहते हैं। इसके अतिरिक्त, वृक्ष भी पानी पर निर्भर है। प्रकाश संश्लेषण प्रक्रिया में पानी एक महत्वपूर्ण घटक है। कृषि, जिसके द्वारा मानव अपने लिए भोजन उत्पन्न करता है, वह अपनी सफलता के लिए पूर्ण रूप से पानी पर निर्भर है।

जैसे कि पहले बताया गया है, केवल पृथ्वी पर पानी तीनों अवस्थाओं में पाया जाता है। पृथ्वी पर जीवन का आरंभ पानी में ही हुआ था। पृथ्वी पर ज्ञात सबसे प्राचीन सूक्ष्मजीवी के जीवाश्म जलतापीय छिद्र में पाए गए है।

पानी जीवन के लिए महत्वपूर्ण है। किन्तु पृथ्वी पर जीवन संभव होने के अनेक कारण है। जैसे कि इसके इर्द-गिर्द जो वायुमंडल है, उसमें उपस्थित सभी गैस जीवन हेतु उचित अनुपात में है। इसके अतिरिक्त वायुमंडल में ओज़ोन परत सूर्य की हानिकारक परा-बैंगनी किरणों से बचाती है। पृथ्वी की सूर्य से दूरी आदर्श है, यह न अधिक गर्म है न यह अधिक ठंडी है, और पृथ्वी पर जो भी जीवन उत्तपन्न हुआ है, वह एक-दूसरे का पूरक है। सभी किसी-न-किसी चीज के लिए एक-दूसरे पर निर्भर है।

पृथ्वी विशेष केवल इसलिए नहीं है कि इस पर जीवन है, अपितु इसलिए भी है कि यह हमारा घर है। अन्तरिक्ष में घूमते इस गृह पर मानव जाति का समग्र इतिहास, वर्तमान और भविष्य है।

अन्तरिक्ष अन्वेषण - पृथ्वी के पार

अपनी ऊँचाई और समग्रता में वह नीला है,
अपने रूपक में वह सूक्ष्म, उत्प्रेक्षा में आकर्षण है,
उसकी विनम्रता ने चुना हैं खालीपन अपने लिए
उसको समझ पाना ही चुनौती है हमारे लिए

- गोविंद द्विवेदी

आज मानव जाति विज्ञान की सहायता से अन्तरिक्ष अन्वेषण कर रही है। इस में सबसे बड़ा और महत्वपूर्ण पड़ाव रहा - 1969 में मानव का चंद्रमा पर कदम रखना।

4 अक्टूबर 1957 को सोवियत संघ (यूएसएसआर) ने पहले कृत्रिम उपग्रह स्पूतनिक का प्रक्षेपण किया था। इस दौरान, संयुक्त राज्य अमेरिका और सोवियत संघ के मध्य शीत युद्ध चल रहा था। हर क्षेत्र में यह दो विश्व शक्तियाँ प्रतिस्पर्धा कर रही थी। उपग्रह का सफल प्रक्षेपण अमेरिका के लिए चिंता का विषय था। किन्तु सोवियत संघ ने एक माह पश्चात इस से भी बड़ी उपलब्धि हासिल की, जब वे अन्तरिक्ष में एक जीवित प्राणी को भेज पाने में सफल रहे। स्पूतनिक द्वितीय पर लाइका नाम के कुत्ते को अन्तरिक्ष में भेजा गया। इसके पश्चात, अन्तरिक्ष यात्रा पर प्रथम मनुष्य यूरी गगारिन गए। उन्होंने 12 अप्रैल 1963 को उड़ान भरी और अन्तरिक्ष में 108 मिनट बिताए। तीन सप्ताह पश्चात, अमेरिका द्वारा भी एलन शेपर्ड को अन्तरिक्ष में भेजा गया, किन्तु उनकी उड़ान केवल 15 मिनट की रही।

इस दौरान सोवियत संघ ने अन्तरिक्ष अन्वेषण के क्षेत्र में अभूतपूर्व तरक्की की। उन्होने लूना 2 नामक अन्तरिक्ष यान छोड़ा। यह सफलतापूर्वक चंद्रमा की सतह पर पहुँचने वाला प्रथम अन्तरिक्ष यान बना। इसके पश्चात लूना 3 यान छोड़ा गया। इस यान ने चंद्रमा के सुदूर भाग की तस्वीरें ली। वोस्तोक 6 यान द्वारा प्रथम महिला अन्तरिक्ष यात्री वेलनटीना तेरेश्कोवा को अन्तरिक्ष में भेजा गया।

1960 के दशक में राष्ट्रपति कैनेडी के कार्यकाल के दौरान अंतरिक्ष के क्षेत्र में अमेरिका ने अभूतपूर्व प्रगति की। सर्वप्रथम प्रोजेक्ट जेमिनी लाँच हुआ, जिसका लक्ष्य नासा के अनुसार, मुख्य रूप से पृथ्वी की कक्षा में उपकरण और मिशन प्रक्रियाओं का परीक्षण करना और भविष्य के अपोलो मिशनों के लिए अंतरिक्ष यात्रियों और ग्राउंड क्रू को प्रशिक्षित करना था।

इसके पश्चात प्रोजेक्ट अपोलो के अंतर्गत मनुष्य चंद्रमा की सतह पर उतरा। 20 जुलाई 1969 को नील आर्मस्ट्रांग और बज्ज ओल्ड्रिन चंद्रमा की सतह पर कदम रखने वाले पहले मनुष्य बने। अन्तरिक्ष अन्वेषण के क्षेत्र में यह एक अभूतपूर्व उपलब्धि थी और साथ ही समस्त मानव समाज के लिए भी एक बहुत बड़ी कामयाबी थी। इस उपलब्धि ने मानव की कल्पना शक्ति के नए आयाम स्थापित किए और साथ ही साथ इस विश्वास को भी अटल किया कि यदि पर्याप्त प्रयास किए जाएं तो कुछ भी हासिल किया जा सकता है।

अपोलो मिशन के पश्चात, अन्तरिक्ष अन्वेषण के क्षेत्र में निरंतर प्रगति होती रही, किन्तु मानव की उड़ान चंद्रमा तक ही सीमित रही।

अन्तरिक्ष अन्वेषण में भारत

भारत में अन्तरिक्ष अन्वेषण का कार्य भारतीय अन्तरिक्ष अनुसंधान संस्था (इसरो) द्वारा किया जाता है। इसका गठन 15 अगस्त 1969 को किया गया था।

इसरो ने अन्तरिक्ष अन्वेषण के क्षेत्र में अभूतपूर्व तरक्की की है। आज भारत न केवल कृत्रिम उपग्रह के प्रक्षेपण में आत्म-निर्भर है। अन्य देश भी अपने उपग्रहों का प्रक्षेपण इसरो से करवाते हैं।

चंद्रयान 3 के साथ भारत चंद्रमा के दक्षिणी ध्रुव पर उतरने वाला पहला देश बन गया है।

अन्तरिक्ष अन्वेषण का क्षेत्र रोमांचक संभावनाओं से भरा हुआ है। भावी स्पेस मिशनों की बात करें तो अभी मंगल ग्रह पर मानव को पहुंचने, चंद्रमा पर मानव कॉलोनी की संभावनाओं को तलाशने, बड़े स्तर पर अन्तरिक्ष यात्रा एवं अन्तरिक्ष में निवास को सुलभ बनाने, उपग्रह और रॉकेट तकनीक को और अधिक उन्नत बनाकर अंतरिक्ष संबंधी और अधिक डाटा एकत्र करने और उसे प्रोसेस करने, अंतरिक्ष में किसी अन्य ग्रह पर जीवन की खोज करने संबंधी प्रयास किए जा रहे हैं। अज्ञात का कथन है कि-

"अन्तरिक्ष अन्वेषण केवल ब्रह्मांड की यात्रा नहीं है, यह मानव के भीतर की असीमित क्षमताओं एवं प्रतिभाओं को ढूंढ निकालने की यात्रा भी है। अंतरिक्ष अंतिम सीमा नहीं है; यह एक ऐसी सीमा है जो प्रत्येक अन्वेषण के साथ विस्तारित होती है और मनुष्य को अपनी सीमाओं से पार पाने के लिए निरंतर प्रेरित करती है। यह सीमा सितारों से परे और हमारी जिज्ञासा की गहराई के अनंत तक जाती है।" - अज्ञात

ईश्वर कृपा

कृपा है ईश्वर की हम सब पर,
जैसे है बिखरी जीवदायिनी पवन सर्वत्र,
अंतर्मन से देखा तो,दिख रही प्रभु कृपा सर्वत्र ।
वाह्य दृष्टि से देखा तो, मन हो जाता है विचलित,
कब की प्रार्थना निर्मल मन से, शेष रही न चिंता किंचित ।।
सांसारिक बातों के कारण, जब मची हृदय में उथल पुथल,
शांत चित्त से प्रभु स्मरण ने, कर दिया भ्रान्ति का ज्वार विफल।
विष पान किया माँ मीरा ने, रचे गये प्रति पल षडयंत्र,
कृपा हुई मधुसूदन की तो, विष पात्र बन गया अमृत संयंत्र ।।
जीवन के संघर्षों से, उद्विग्न हुआ जब अंतर्मन,
मिली प्रेरणा धैर्य धरो, न भूलो तुम प्रभु का सुमिरन।
निर्जन-सा लगता जीवन, फिर से बन जायेगा मधुबन,
विक्रांत निशा का तिमिर छंटेगा, आयेगी सूर्य रश्मि नूतन।।
जीवन के झंझावातों से जब, किया हृदय ने करुण क्रंदन,
बह चली अश्रुधारा अविरल,जलमग्न हुए थे ये लोचन।
तब साथ खड़ा पाया मैंने, तुमको ही हे संकटमोचन,
लगा हृदय से थाम लिया, गिरने ना दिया तुमने भगवन ।।
ज्यों सूर्य प्रभा करती है निशदिन, नवल विचारों का संचार,
ज्यों चन्द्र कान्ति की शीतलता से, तृप्त हुआ सारा संसार ।
हुआ प्रदर्शित निज जीवन का, धूमिल पथ भी उसी प्रकार,
मिट गया तमस अंतर्मन का, निज जीवन में हुआ सुधार?
गंगा माँ की जलधारा से, अब कर अभिषेक विचारों का,
कर शिरोधार्य प्रभु आज्ञा को, अब कर संहार विकारों का।
तभी विचारों के दुर्गम वन में, आया था पावन यही विचार
ले लो शरणागति ईश्वर की अब, करो स्वयं पर यह उपकार।।
हे करुणासिंधु, हे पथ प्रदर्शक! करो प्रशस्त मार्ग हम सब का,
मिट जाएँ सारे शोक सभी, उज्जवल हो जीवन भानु किरण सा।

नेहा मिश्रा
वरिष्ठ प्रबन्धक
आईटी विभाग
कानपुर अंचल

नन्हा सा रिश्ता....

गगन वर्मा
मुख्य प्रबन्धक एवं संकाय
एम डी आई, बेलापुर

सुबह-सुबह बालकनी में आंख बंद करके कुछ देर बैठना, हल्की सी रोशनी, भीनी सी खुशबू और चिड़ियों की चहचहाहट को महसूस करना, मुंबई की भाग-दौड़ भरी ज़िंदगी में, मेरे दिन की यही सबसे अच्छी शुरुआत होती है। ऐसी ही एक सुबह, एक मीठी-सी चहचहाने की आवाज मुझे बहुत करीब से सुनाई दी, आंखें खोली तो देखा वह आवाज बालकनी से नहीं, बल्कि मेरे घर के हॉल से आ रही थी, जहां पर एक छोटी-सी चिड़िया, अपनी चोंच में एक लंबा-सा तिनका दबाये पूरे हॉल में नजर दौड़ा रही थी। उसकी निगाहें देख रही थी कि कौन-सी जगह उसके आशियाने के लिए सबसे उपयुक्त है। कुछ ही देर में उसने हाल की फाल्स सीलिंग के एक कोने में अपने आशियाने की नींव डाल ली।

एक-दो दिन में ही 'गुड मॉर्निंग मुंबई' का एक नया एपिसोड मेरे घर में शुरू हो गया, जिसने जल्द ही मेरी पत्नी को भी उससे जोड़ लिया। धीरे-धीरे उस नन्ही चिड़िया को भी यकीन हो चला था कि अब उसका घोसला सुरक्षित है क्योंकि सुबह होते ही मेरी पत्नी उसके आने के लिए बालकनी की खिड़की खोल देती थी और अब हम लोग गर्मी में भी बिना फैन ऑन किए उस नन्ही सी जान का आशियाना बनता देख रहे थे। कुछ ही दिनों में वह चिड़िया जैसे परिवार का हिस्सा बन गई थी।

वह हर बार एक छोटा तिनका और कभी तार का टुकड़ा लाकर अपने घोंसले में जोड़ती, हम लोगों के पास बैठकर चहकती और फिर उड़ जाती, मानो एक अधिकार से बोल रही हो कि मेरे घर का ख्याल रखना मैं फिर आती हूं। हम लोगों को एक नन्हा-सा किराएदार मिल गया था और किराए के तौर पर उसकी मेहनत और उसका चुलबुलापन हमारे चेहरों पर मुस्कुराहट ला देता था। बीच-बीच में उसकी पार्टनर भी विज़िट करने आती और जाँच करती कि उसने बिल्डिंग मटिरियल सही लगाया है या नहीं। अब तो उसे आदत सी हो गयी थी। वह फैन चालू होने पर भी सही अंदाज़े से अपने आशियाने को सँजोने पहुँच जाती थी।

एक दिन उसके रहते हुए घर पर मेहमान आ गए और वो बहुत बेचैन-सी हो गयी, मानो उसके आशियाने पर किसी की बुरी नज़र पड़ गयी हो। उस बेचैनी में बाहर निकलने की कशिश में वह पंखे से टकरा गई। उसके टकराने की आवाज़ ने हमारे लिए मानो वक़्त को थाम दिया हो। सभी लोग उसकी तरफ दौड़ पड़े उसे छटपटाता देख कर सबका दिल दहल गया। घर आए मेहमान ने भी हमारी हालत देखकर हमें पक्षियों के एक हॉस्पिटल के बारे में जानकारी देकर वहाँ से चले जाना ही मुनासिब समझा। मेरे परिवार का सबसे नन्हा सदस्य बुरी तरह से तड़प रहा था। हॉस्पिटल में डॉक्टर ने इलाज के दौरान कहा – गले में गहरा घाव हुआ है, बच पाना मुश्किल है। नम आँखों के साथ हम उसे घर ले आए। वो मेरी हथेली पर ही आँख बंद करके लेटी रही, मैं जितनी बार उसे बोलता- बेटा! वो आँख खोलकर मेरी तरफ देखती और फिर सो जाती मानो खुद

को सुरक्षित महसूस कर रही हो कि अब वो बच जाएगी। दो घंटे तक ऐसा ही देखकर, मेरी पत्नी ने कहा कि इसे पास में रहने वाले फॉरेस्ट ऑफिसर को दे देते हैं शायद बच जाए। फिर न चाहते हुए भी हमें उसे खुद से दूर करना पड़ा। अगले दिन उसकी हालत में सुधार देख हमारी भी जान में जान आयी। फॉरेस्ट ऑफिसर ने भी कहा कि आप 12 बजे के बाद इसे ले जा सकते हैं।

सबके चेहरों पे खुशी लौट आयी थी और उसे वापस लाने के लिए पत्नी को बोलकर मैं भी ऑफिस चला गया। उस दिन दोपहर को जब उसका हालचाल लेने के लिए मैंने घर फोन किया तो पत्नी ने फोन पर मुझे बताया कि बाल्कनी में रखते ही वो जैसे-तैसे कोशिश करके अपने पार्टनर के साथ उड़ गयी, असल में बच्चों के नजदीक होने के कारण मेरी पत्नी फोन पर इशारे से मुझे कुछ और ही बता रही थी। ये उस छोटे से रिश्ते की हॅप्पी एंडिंग हो सकती थी। उसके ठीक होने की खुशी तो होती, भले ही इस बात पर दु:ख होता कि शायद वो कभी लौट कर घर न आए..... लेकिन असल में लाख कोशिशों के बावजूद वो बच नहीं पाई थी। पत्नी की आवाज़ के भारीपन से, मैं समझ गया था, ज़रूरी भी था क्योंकि मेरे बच्चे भी बेसबरी से उस नन्ही-सी जान का इंतज़ार कर रहे थे। अगर उन्हें वास्तविकता पता चलती तो वो भी टूट जाते। मुझे मायूस देख मेरी पत्नी ने उस छोटे से किराए के घर को हमारे घर से हटा दिया। कुछ रिश्तो की उम्र बहुत कम होती है लेकिन उन पलों का स्पर्श जिंदगी भर की छाप छोड़ जाता है। मैं आज भी अपने हॉल का वो कोना देखता हूँ तो वो दो घंटे याद आते हैं जब वो मेरी हथेली पर सुकून से लेटी थी और मन ही मन मुझसे कह रही थी कि हाँ अब मैं सुरक्षित हूँ...... !

तलाश

कंप्यूटर के परदे पर स्थिर आंखें,
किताबों के उजले-काले अक्षर ढूंढती हैं ।
की-बोर्ड पर खिटपिट करती उंगलियां,
कागज के पन्नों की मखमली सतह ढूंढती हैं।
लेन-देन के कारोबार में उलझा दिमाग,
उर्वर विचारों का सान्निध्य ढूंढता है ।
सच-झूठ, दाँव-पेंच के बीच किंकर्तव्यविमूढ़-सा अंतस,
अंजुरी भर निश्छलता ढूंढता है।
एलइडी बल्बों की दूधिया रोशनी में,
कमरे की खिड़की मुट्ठी भर नीला आसमान ढूंढ़ती है।
बोझिल दुपहरी में कट रही जिंदगी,
अलसाई शामों वाला शहर ढूंढती है।
खुद की ही तलाश में यूँ गुम होते जा रहे हम,
मानो कोई हिरन अपनी कस्तूरी ढूंढता है।

मेधा सूर्यांशी
प्रबंधक
रिटेल कारोबार केंद्र
भागलपुर अंचल

विजिलेन्स ही है इंटेलीजेन्स

कैसे रखे हम विजिलेन्स, कैसे बढ़ाएं अपना कॉमन सेंस।
मांगे जब कोई ओटीपी, सोचो कि क्या जरूरत है इसकी।
पैसों का लालच अगर किया तो, कट जाएगा बैंक बैलेन्स।
भेजे कोई अनजाने लिंक, तो करलो अपने ब्रेन में पिंग।
क्या है इसकी प्रामाणिकता, दिखाओ अपने माइंड की प्रेसेंस।
कोई करता एटीएम बंद, कोई करता खाता बंद।
नहीं फसों इन सब बातों मे, ले लो अपने बैंक का रेफरेंस।
कभी नहीं देना ओटीपी/सीविवि/पिन, रट लो बस ये सेंटेन्स।
साइबर क्राइम अगर होता है तो, 1930 पर करो कम्प्लेंट।
समझदारी है ये समझ जाने में, विजिलेन्स ही है इंटेलीजेन्स।।

ललिता सुनार्थी
अधिकारी
अर्जनपुरा शाखा
जोधपुर अंचल

"डिजिटल दुनिया का साइबर स्पेस"

भास्कर सिंह रावत
राजभाषा अधिकारी
राजभाषा विभाग
प्रधान कार्यालय

मिथ्या समाज का आचरण- सभ्यता का उत्थान है या पतन

भारतीय दर्शन के पुरोधा आदि शंकरचार्य जी का प्रसिद्ध श्लोक है कि

ब्रह्म सत्यं जगन्मिथ्या जीवो ब्रह्मैव नापरः।
अनेन वेद्यं सच्छास्त्रमिति वेदान्तडिण्डिमः।।

अर्थात् समस्त शास्त्रों में उत्कृष्ट, वेदों के ज्ञान में बताया गया है कि ब्रह्म सत्य है, वास्तविक है जबकि जगत/ सांसारिकता मिथ्या है, ब्रह्म एवं जीव भिन्न नहीं हैं। दर्शनशास्त्र के उद्धरण बहुत गूढ माने जाते हैं। इन्हें संदर्भ, प्रकरण एवं विषय के अनुसार व्यापक अर्थों में समझा जाता है। आज सभ्यता के रूपान्तरण के मुहाने पर खड़े मानव के लिए आदि शंकरचार्य जी का उपर्युक्त श्लोक खोए हुए मुसाफिर के लिए दिशासूचक यंत्र के समान है। डिजिटलीकरण और मशीनीकरण में अंधाधुंध प्रगति करते हुए मनुष्य ऐसे मोड पर आ खड़ा हुआ है जिसमें कपोल कल्पनाओं (साई-फ़ाई) सी बातों (जैसे- मशीन का मानव पर नियंत्रण) पर आज का बुद्धिजीवी वर्ग गहन चिंतन-मनन करने को मजबूर है। सृजनात्मक कृत्रिम बुद्धिमता (जेनरेटिव एआई), मशीन लर्निंग, सोशल मीडिया, साइबर स्पेस आदि हमारे जीवन को अत्यधिक सुविधाजनक बनाने के साथ-साथ नई-नई कठिनाइयों से भी परिचय करवा रहें हैं। ये नई समस्याएँ और कठिनाइयाँ अभूतपूर्व हैं। आभाषी दुनिया (डिजिटल वर्ल्ड) के विभिन्न आयामों पर यदि हम नज़र डालें तो आदि शंकरचार्य जी की 'जगत मिथ्या' वाली अवधारणा अधिक गहन होकर मिथ्या जगत में एक और मिथ्या दुनिया का बोध करवाती है। सबसे महत्वपूर्ण बात है कि अन्य आयाम (साइबर स्पेस) में पनपने वाली यह मिथ्या सांसारिकता वास्तविक जीव को मन, शरीर और आध्यात्मिक रूप से प्रभावित करने में सक्षम है।

चार्ल्स डार्विन के विकासवाद के सिद्धांत के अनुसार वही प्रजाति विकास के क्रम में आगे बढ़ती है, जो बदलते परिवेश के अनुसार खुद को ढालती रहती है। यहाँ परिवेश से तात्पर्य प्राकृतिक पारिस्थितिक तंत्र से है जिसमें जलवायु, भौतिक वातावरण, भौगौलीक परिस्थितियाँ आदि होते हैं। परंतु विकासक्रम के इस पड़ाव पर हमारे समक्ष एक ऐसा आभाषी परिवेश सृजित हुआ है, जो न केवल प्राकृतिक पारिस्थितिक तंत्र से भिन्न है अपितु उसकी उपस्थिति गैर-भौतिक होते हुए भी भौतिक से अधिक प्रभावशाली है। यह नूतन परिवेश जिसमें आधुनिक पीढ़ी प्रविष्ट हो चुकी है, इसे "साइबर स्पेस" की संज्ञा दी गई है।

इंटरनेट के आविष्कार ने मानव जीवन के सभी पहलुओं को रूपांतरित कर दिया है। इसने दुनिया भर के लोगों को वर्चुअली जोड़ दिया है, ज्ञान-अज्ञान के प्रसार की गति को अत्यधिक बढ़ा दिया है, विज्ञान तथा तकनीकी के शोध क्षेत्र में अभूतपूर्व प्रगति स्थापित की है, बाज़ार और बैंकिंग जैसी अनेकों सुविधाओं को उँगलियों पर समेट कर रख दिया है। सोश्ल मीडिया प्लेटफॉर्मों पर भौगौलिक और सामाजिक सीमाओं से रहित सामाजिक ताना-बाना पनप चुका है। कोविड-19 महामारी के प्रकोप के दौरान टेलीमेडिसिन, ऑनलाइन प्रशिक्षण, वर्क फ्रॉम होम जैसी संभावनाएं साकार हुई और ई-दुनिया का एक नया दौर, जो अभी तक बाल्यावस्था में था, उसने तीव्रता से प्रौढ़ावस्था को प्राप्त कर लिया है। इंटरनेट पर विद्यमान इस नए परिवेश को "साइबर स्पेस" के नाम से परिभाषित किया गया है। साइबर वर्ल्ड के शुरुआती दौर में फल-फूल रही नई पीढ़ी के बारे में आधुनिक युग के एक लेखक दीपक चोपड़ा ने कहा था कि

"नई पीढ़ी के मूल्यों में गैर-सांप्रदायिक समाज, फौज रहित कल्चर, ग्लोबल शेयरिंग, पर्यावरण शोधन, सतत पोषणीय

अर्थव्यवस्थाएं, आत्म विश्वास, सामाजिक न्याय, गरीबों का उत्थान, कर्मों में दया और प्रेम के साथ-साथ धर्मांधता और कटु-राष्ट्रवाद को पीछे छोड़ देने वाले प्रबुद्ध एवल्यूशन का पुट होगा।"

यदि हम साइबरस्पेस के सकारात्मक पहलुओं पर विचार करें तो यह भौगोलिक बाधाओं को तोड़कर त्वरित संचार और कनेक्टिविटी की सुविधा प्रदान करता है। दुनिया भर के लोग वैश्विक समुदाय की भावना को बढ़ावा देते हुए आपस में सहयोग कर सकते हैं, विचार साझा कर सकते हैं और एकसमान परोपकारी लक्ष्यों के लिए मिलकर काम कर सकते हैं। यह हमें सूचना तक तीव्र पहुंच प्रदान करता है। यह लोगों को ज्ञान, शैक्षिक संसाधनों और सीखने के अवसर देकर सशक्त बनाता है, जिससे बेहतर शिक्षा और जागरूकता को बढ़ावा मिलता है, ऑनलाइन व्यवसायों, उद्यमिता और डिजिटल नवाचार के लिए यह एक खुला मंच है। ई-कॉमर्स, फ्रीलांसिंग और वर्क फ्रॉम होम ने आर्थिक अवसरों को विस्तार दिया है, जिससे व्यक्ति वैश्विक अर्थव्यवस्था में शामिल हो गए हैं। टेलीमेडिसिन और ऑनलाइन स्वास्थ्य संसाधन आज हाशिये पर खड़े लोगों तक मेडिकल सुविधाएं पहुंचा रहें हैं। सोशल मीडिया और ऑनलाइन प्लेटफ़ॉर्म नागरिक सहभागिता और लोकतांत्रिक भागीदारी सुनिश्चित करते हैं। कला, संगीत, साहित्य और विविध दृष्टिकोणों को साझा करने में सक्षम बनाकर साइबर स्पेस सांस्कृतिक आदान-प्रदान को सुविधाजनक बनाता है। यह नवाचार के केंद्र के रूप में कार्य करता है, जिसमें व्यक्ति और संगठन, समाज को लाभ पहुंचाने वाली नई प्रौद्योगिकियों को विकसित करने के लिए विश्व स्तर पर सहयोग करते हैं। साइबरस्पेस आपदा में प्रतिक्रिया और राहत प्रयासों में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। सोशल मीडिया और ऑनलाइन प्लेटफ़ॉर्म आपात स्थिति के दौरान तेजी से संचार की सुविधा प्रदान करते हैं, जिससे बचाव कार्यों और सहायता सामग्री के वितरण का त्वरित समन्वय संभव हो पाता है।

"साइबर स्पेस एक ऐसा साम्राज्य है जहां विचारों का सृजन ही नवोन्मेष की मुद्रा है, एक ऐसी दुनिया जहां मस्तिष्क का मिलन तकनीक की अपार संभावनाओं से होता है। इसकी सीमाएं भौतिकता से परे कल्पना तक फैली हैं।"

जैसा कि अक्सर कहा जाता है हर सिक्के के दो पहलू होते हैं, वैसे ही साइबर स्पेस ने हमें लाभों के साथ-साथ समस्याओं की भी सौगात दी है। ये समस्याएँ अलग-अलग ढंग से हमें प्रभावित करती हैं। कई मनोवैज्ञानिकों ने इंटरनेट और प्रौद्योगिकी के उपयोग के मनोवैज्ञानिक प्रभावों से संबंधित चिंताएँ व्यक्त की हैं। लैरी डी. रोसेन ने मानव के व्यवहार पर प्रौद्योगिकी के प्रभाव का अध्ययन विशेष रूप से स्मार्टफोन के उपयोग के संदर्भ में किया है। वह लोगों को उनकी डिजिटल आदतों और प्रौद्योगिकी के प्रभाव से तनाव और चिंता पैदा होने की क्षमता के प्रति सचेत करते हैं। साइबरस्पेस में लगातार कनेक्टिविटी और सूचना का अधिभार, तनाव और चिंता को बढ़ाता है क्योंकि हम तेज़ गति वाली ऑनलाइन दुनिया के साथ बने रहना चाहते हैं। अंतर-संबंधित होने के बावजूद, साइबरस्पेस पर अत्यधिक निर्भरता सामाजिक अलगाव और अकेलेपन की भावनाओं को जन्म देती है, क्योंकि आमने-सामने की बातचीत का प्रतिस्थापन यहाँ पर आभासी संचार द्वारा किया जाता है। एमआईटी की प्रोफेसर शेरी टर्कल ने आमने-सामने की बातचीत पर प्रौद्योगिकी से पड़ने वाले प्रभाव के प्रति आगाह किया है। वह वास्तविक मानवीय संबंध के महत्व को समझने की वकालत करती हैं और प्रौद्योगिकी द्वारा सहानुभूति जैसी भावनाओं को नष्ट करने की क्षमता के बारे में चिंतित हैं। इसलिए मानवीय गुणों के संरक्षण के लिए ऐसी प्रौद्योगिकी के उपयोग को

सीमित करने या कोई टिकाऊ समाधान निकालने की आवश्यकता है।

साइबरस्पेस पर गुमनाम होने की सुविधा साइबरबुलिंग और ऑनलाइन उत्पीड़न को बढ़ाने में योगदान देती है, जिसके मनोवैज्ञानिक प्रभाव बहुत खतरनाक हो सकते हैं और पीड़ितों के मानसिक स्वास्थ्य पर नकारात्मक असर डाल सकते हैं। इसके कारण साइबर अपराध बढ़ते जा रहे हैं। मनुष्य प्रवृत्ति से जिज्ञासु है और साइबरस्पेस लोगों को दूसरों के जीवन के विशिष्ट पहलुओं से अवगत कराता है, जो (एफ़ओएमओ- फियर ऑफ मिसिंग आउट) कुछ छूट जाने के डर को बढ़ावा देता है। इससे अपर्याप्तता की भावना पैदा होती है और आत्म-सम्मान पर नकारात्मक प्रभाव पड़ता है। जीन एम. ट्वेंज नाम के एक मनोवैज्ञानिक जो पीढ़ीगत मतभेदों पर अपने शोध के लिए लोकप्रिय हैं, उन्होंने विशेष रूप से युवा पीढ़ियों के बीच अत्यधिक सोशल मीडिया के उपयोग और मानसिक स्वास्थ्य मुद्दों के बीच संभावित संबंधों के बारे में चिंता जताई है। अनेक देशों ने साइबर अपराधों के खिलाफ कड़े कानून बना लिए हैं लेकिन क़ानूनों की भौगोलिक सीमाओं के कारण वे पूरी तरह कारगर नहीं हो पाए हैं। इसलिए इस समस्या को वैश्विक पटल पर संबोधित करना जरूरी है।

साइबरस्पेस में सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म दूसरों से वेलिडेशन की संस्कृति को बढ़ावा देते हैं, जिससे आत्म-मूल्य की भावना लाइक, कमेन्ट और शेयर की संख्या पर निर्भर हो जाती है। साइबरस्पेस में सूचना का निरंतर प्रवाह लोगों को संज्ञानात्मक रूप से प्रभावित करता है, जिससे एकाग्रता, निर्णय लेने में कठिनाई और मानसिक थकान की संभावना बढ़ती है। लेखक निकोलस कैर ने संज्ञानात्मक प्रक्रियाओं पर इंटरनेट के प्रभाव पर विस्तार से लिखा है। उनकी पुस्तक "द शैलोज़" में इस विषय का उल्लेख किया गया है कि लगातार ऑनलाइन व्यस्तता से गहनतापूर्वक ध्यान केंद्रित करने और निरंतर गहन विचारों में खोए रहने की हमारी क्षमता किस प्रकार प्रभावित होती है।

साइबरस्पेस में गोपनीयता का क्षरण अत्यधिक तनाव और असुरक्षा की भावना को बढ़ाता है क्योंकि निजी जानकारी का सुलभ होना, उसके दुरुपयोग की संभावना पैदा करता है। साइबरस्पेस लोगों को ऑनलाइन मेल-मिलाप का एक मंच प्रदान करता है और लोग कई बार वास्तविक पहचान बदलकर/छुपाकर संपर्क करते है। इससे पहचान संबंधी भ्रम पैदा होता है और स्वस्थ आत्म-अवधारणा को बनाए रखने में कठिनाई पैदा करता है। सोशल मीडिया, गेमिंग या अन्य ऑनलाइन गतिविधियों सहित साइबरस्पेस का अत्यधिक उपयोग, लत और बाध्यकारी व्यवहार को जन्म दे सकता है, जो मानसिक स्वास्थ्य पर नकारात्मक प्रभाव डाल सकता है। व्यवहारवादी अर्थशास्त्री और मनोवैज्ञानिक एडम ऑल्टर ने अपनी पुस्तक "इरेज़िस्टेबल" में प्रौद्योगिकी की व्यसनी प्रकृति को उजागर किया है। वह बताते हैं कि कैसे प्रौद्योगिकी के कुछ पहलुओं, विशेष रूप से गेमिंग और सोशल मीडिया के क्षेत्र में तकनीक को हद से ज्यादा ध्यान आकर्षण करने और उसमें लगे रहने के लिए डिज़ाइन किया जा सकता है।

एक और जहां साइबर स्पेस के अनेक लाभ हैं तो दूसरी ओर इसकी चुनौतियों से निपटना भी बहुत जरूरी है। यदि समय रहते साइबर खतरों का प्रबंधन नहीं किया गया, तो इसे त्रासदी में बदलते देर नहीं लगेगी। मशहूर लेखक रोबर्ट मार्टिन का कथन है कि अब केवल दो प्रकार की कंपनियां हैं एक तो वो जिन्हें हैक किया जा चुका है और दूसरी वो जिन्हें हैक कर लिया जाएगा। इसलिए हमें साइबर सुरक्षा सुनिश्चित करनी होगी, साइबर स्पेस से विभाजनकारी तत्वों को भगाना होगा, गलत सूचना के प्रचार-प्रसार को रोकना होगा, तभी हम एक सभ्यता के रूप में अपने अस्तित्व की रक्षा कर पाएंगे। इस लेख की शुरुआत आदि शंकरचार्य जी के प्रसिद्ध श्लोक से हुई थी, जिसका एक तात्पर्य यह भी है कि "सांसरिक भ्रम से पार पाकर ब्रह्म को धारण कर लेना ही जीव का ध्येय है।" इसलिए हमें मानवीय संवेदनाओं को संजीदा रखने के लिए साइबर स्पेस के खतरों से निपटना और उससे उपजने वाली समस्याओं का निदान तीव्रता से करना होगा। मानवता के समग्र कल्याण के लिए साइबर स्पेस के सावधानीपूर्वक और संतुलित उपयोग का महत्व समझना होगा।

बैंक ऑफ इंडिया परिवार के संग 25 वर्षों की रिश्तों की जमापूंजी

सैयद असद महदी
उप महाप्रबंधक
प्रधान कार्यालय
का.ग्र.ति: 26.05.1984

वेंकटाचलम ज्योति
उप महाप्रबंधक
प्रधान कार्यालय
का.ग्र.ति: 08.08.1984

प्रमोद कुमार अग्रवाल
उप महाप्रबंधक
एनबीजी-एमपी छत्तीसगढ़
का.ग्र.ति: 13.08.1984

हेमंत प्रभाकर खेर
उप महाप्रबंधक
प्रधान कार्यालय
का.ग्र.ति: 08.10.1984

संतोष बी. सावंतदेसाई
उप महाप्रबंधक
रत्नागिरी आंचलिक कार्यालय
का.ग्र.ति: 01.02.1985

मनोहर रामदास माने
उप महाप्रबंधक
एनबीजी- दक्षिण II कार्यालय
का.ग्र.ति: 02.05.1985

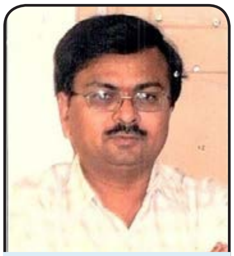
टी. वेंकटेश्वर राव
उप महाप्रबंधक
चेन्नई अंचल
का.ग्र.ति: 09.05.1985

जयश्री देशमुख
उप महाप्रबंधक
नासिक अंचल
का.ग्र.ति: 23.10.1985

श्रीनाथ नंबुरु
उप महाप्रबंधक
एनबीजी दक्षिण
का.ग्र.ति: 24.10.1985

नीरज कुमार दत्ता
उप महाप्रबंधक
खंडवा अंचल
का.ग्र.ति: 27.01.1986

नरसिंहन के. आर. लक्ष्मी
उप महाप्रबंधक
प्रधान कार्यालय
का.ग्र.ति: 25.06.1986

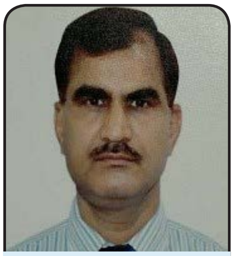
रामपाल सिंह
उप महाप्रबंधक
एनबीजी-एमपी छत्तीसगढ़
का.ग्र.ति: 30.09.1986

विवेक वासुदेव प्रभु
उप महाप्रबंधक
एनबीजी- चंडीगढ़
का.ग्र.ति: 14.09.1987

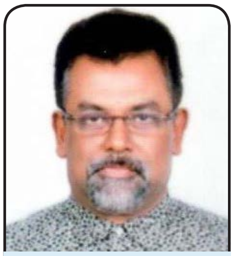
के. प्रभाकरन
उप महाप्रबंधक
एनबीजी-पूर्व कोलकाता
का.ग्र.ति: 21.09.1987

बिस्वजीत गुहा
उप महाप्रबंधक
हावड़ा अंचल
का.ग्र.ति: 10.06.1988

ललिता डी.
उप महाप्रबंधक
चेन्नई अंचल
का.ग्र.ति: 07.12.1988

संजीव कुमार
उप महाप्रबंधक
रांची अंचल
का.ग्र.ति: 01.03.1989

जय नारायण घीसा लाल
उप महाप्रबंधक
नागपुर अंचल
का.ग्र.ति: 05.05.1989

श्रीनिवास कप्पागंटु
उप महाप्रबंधक
विशाखापत्तनम अंचल
का.ग्र.ति: 13.06.1989

राजेश वेंकटराज उपाध्या
उप महाप्रबंधक
प्रधान कार्यालय
का.ग्र.ति: 30.03.1990

मानसी मनोज फेने
उप महाप्रबंधक
प्रधान कार्यालय
का.ग्र.ति: 30.04.1990

रमेश कुमार
उप महाप्रबंधक
विदर्भ आंचलिक कार्यालय
का.ग्र.ति: 24.06.1996

केशव कुमार
उप महाप्रबंधक
अहमदाबाद आंचलिक
लेखापरीक्षा कार्यालय
का. ग्र. ति: 22.05.1990

शैलेंद्र कुमार राव
उप महाप्रबंधक
कोलकाता आंचलिक
लेखापरीक्षा कार्यालय
का.ग्र.ति: 28.05.1990

गणेश टोप्पो
उप महाप्रबंधक
पुणे आंचलिक
लेखापरीक्षा कार्यालय
का.ग्र.ति: 31.05.1990

गौरी शंकरराव सैलदा
उप महाप्रबंधक
नैरोबी, केन्या विदेशी शाखा
का.ग्र.ति: 21.09.1990

चन्द्रशेखर विनायक मंत्री
उप महाप्रबंधक
सोलापुर आंचलिक कार्यालय
का.ग्र.ति: 20.03.1992

सुभाकर म्यलाबाथुला
उप महाप्रबंधक
तेलंगाना आंचलिक कार्यालय
का.ग्र.ति: 25.03.1992

मनीष कर रे
उप महाप्रबंधक
एनबीजी बिहार कार्यालय
का.ग्र.ति: 16.05.1990

अजय ठाकुर
उप महाप्रबंधक
कोयंबटूर आंचलिक कार्यालय
का.ग्र.ति: 31.03.1992

पंकज कुमार सिन्हा
उप महाप्रबंधक
लखनऊ आंचलिक
लेखापरीक्षा कार्यालय
का.ग्र.ति: 31.03.1992

विनय कुमार सिंह
उप महाप्रबंधक
गुवाहटी आंचलिक कार्यालय
का.ग्र.ति: 31.03.1992

अजय कुमार पंत
उप महाप्रबंधक
एनबीजी दिल्ली कार्यालय
का.ग्र.ति: 31.03.1992

भारत सिंह फोनिया
उप महाप्रबंधक
प्रधान कार्यालय
का.ग्र.ति: 03.04.1992

रबीन्द्र नाथ सरकार
उप महाप्रबंधक
एनबीजी ओडिसा कार्यालय
का.ग्र.ति: 03.04.1992

जक्कुला सी. शशिराज
उप महाप्रबंधक
प्रधान कार्यालय
का.ग्र.ति: 10.04.1992

देशराज खटीक
उप महाप्रबंधक
जयपुर आंचलिक कार्यालय
का.ग्र.ति: 02.01.1995

कुमार सुबोध
उप महाप्रबंधक
अमृतसर आंचलिक कार्यालय
का.ग्र.ति: 02.01.1995

मुकेश कुमार झा
उप महाप्रबंधक
सिंगापुर विदेशी शाखा
का.ग्र.ति: 02.01.1995

रमेश एम पी
उप महाप्रबंधक
बंगलुरु आंचलिक कार्यालय
का.ग्र.ति: 02.01.1995

भारत में खेलों का भविष्य

प्रवीणा प्रधान
प्रबंधक
किट यूनिवर्सिटी शाखा
भुवनेश्वर अंचल

भारत एक अरब से अधिक लोगों का देश है। इस देश में मौजूद प्रतिभा एवं क्षमता की जितनी कल्पना की जाए उतनी ही कम है। हाल ही में किए गए एक शोध में ज्ञात हुआ है कि मानव संसाधनों का भंडार होने के बावजूद भी केवल 2% जनसंख्या ही नियमित रूप से खेलों में भाग लेती है। क्या यह केवल अवसरों कि कमी के कारण है या फिर भारतीय समाज में खेलों के प्रति रुचि बहुत कम है! या फिर यह कहें कि खिलाड़ियों को उचित मार्गदर्शन एवं प्रोत्साहन की उपलब्धता बहुत कम है।

भारत में खेलों के क्षेत्र में प्रतिभाओं की कमी नहीं है। विशेषकर भारत के छोटे एवं पिछड़े गांवों की साधारण पृष्ठभूमि के परिवारों से आने वाले खिलाड़ी हिमा दास, मैरी कॉम, दुति चंद ने खेलों में अपना परचम लहराया है। हरियाणा जैसे छोटे प्रदेश से भी अनेक खिलाड़ियों ने देश के लिए खूब मेडल जीते हैं। लेकिन इन प्रतिभाओं ने सीमित संसाधनों के बावजूद यह मुकाम हासिल किया है, इन्हें बहुत शुरुआत से मार्गदर्शन नहीं मिला था और न ही इनको प्रदर्शन के बाद फिल्मी सितारों या क्रिकेटरों की तरह प्रसिद्धि प्राप्त हुई। इसके लिए राजनितिक एवं प्रशासनिक समर्थन की कमी और समाज के द्वारा खेलों को कम महत्व मिलना जिम्मेदार है। प्राचीन भारत में अभिभावकों और शिक्षकों द्वारा खेलों को उचित महत्व दिया जाता था। उस समय मान्यता थी कि खेलों में भाग लेना बच्चों के शारीरिक और मानसिक विकास के लिए बहुत जरूरी है। प्राचीन काल में तीरंदाजी, तलवारबाजी, भारोत्तोलन आदि गतिविधियों को बहुत सम्मान मिलता था। भारत में सक्रिय खेलभावना का प्रमाण महाभारत और रामायण महाकाव्यों में भी मिलता है। लेकिन पिछले कुछ दशकों में अभिभावकों ने खेल जैसी शारीरिक गतिविधियों को अधिक महत्व देना बंद कर दिया है और अपने बच्चों की केवल शैक्षणिक उत्कृष्टता के लिए प्रेरित करते है। आजकल कहा जाता है कि "खेलोगे कूदोगे, बनोगे खराब - पढ़ोगे लिखोगे, बनोगे नवाब।"

अभिभावकों की इसी मानसिकता के कारण खेलों में अपेक्षित प्रगति नहीं हो पा रही है। इसके अलावा अधिकारियों की उपेक्षा ने भी भारत में क्रिकेट के अलावा खेल के अन्य रूपों की लोकप्रियता घटाने में भूमिका निभाई है। पहले तो खेलों के लिए उचित धन भी आबंटित नहीं किया जाता था। लेकिन पिछले कुछ वर्षों में इस प्रवृत्ती में बदलाव हुआ है। भारतीय खेल संस्थाएं सभी प्रकार के खेलों में गहरी रुचि ले रहे हैं। जिसके परिणाम स्वरूप भागीदारी, दर्शकों की संख्या और खेल से संबंधित वस्तुओं और सेवाओं की मांग में वृद्धि हुई है। इस वर्ष केंद्रीय बजट के माध्यम से तकरीबन तीन हजार करोड़ रुपए खेल मंत्रालय को आबंटित किए गए हैं। भारत में अच्छी प्रशिक्षण सुविधाओं का निर्माण किया जा रहा है। विदेशों से कोच और ट्रेनर लाये जा रहे है। बहुत सारे अंतर्राष्ट्रीय ब्रांड भी भारतीय खिलाड़ियों के साथ कोंट्रेक्ट कर रहे है। इससे खिलाड़ियों की आय भी बढ़ रही है। भारत द्वारा अंतर्राष्ट्रीय स्तर के आयोजन जैसे- कॉमनवेल्थ गेम्स, क्रिकेट विश्वकप एवं हॉकी विश्वकप का आयोजन किया जाना भारतीय खेल जगत के लिए एक महत्वपूर्ण उपलब्धि है।

बचपन से ही खेलों में प्रशिक्षण देने, खेल को पेशेवर बनाने और सरकार के प्रोत्साहन देने के कारण ही चीन और अमेरिका जैसे देश खेल जगत में अग्रिम कतार में है। खेलकूद बच्चों को एवं युवाओं को नशे की लत, फोन की लत, मोटापे एवं अवसाद से दूर रखता है उनके व्यक्तित्व को निखार कर उन्हें एक बेहतर इंसान और

जिम्मेदार नागरिक बनाता है । भारत खेलों के क्षेत्र में एक उभरता हुआ सितारा है। भारत ने एथलीट सुविधाओं और प्रशिक्षण में उचित ढंग से निवेश किया है। जो आने वाले समय में और एथलीटों और खिलाड़ियों को प्रोत्साहन देगा।

तेजी से बदलते और बढ़ते खेल उद्योग ने रोजगार के अवसर भी बढ़ाए हैं। इसने उन युवाओं को भी आशा और उम्मीद दी है जो अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर प्रतिस्पर्धा करने के स्वप्न देखते हैं। भारत सरकार ने खेलो इंडिया के माध्यम से एथलीटों को प्रोत्साहन देने सहित उन्हें विश्वमंच पर उत्कृष्ट प्रदर्शन करने के लिए प्रेरित किया है। इसमें तकनीक की मदद से युवा एथलीटों को वैज्ञानिक पद्धति पर आधारित प्रशिक्षण प्रदान करते हुए जमीनी स्तर पर खेल के बुनियादी ढांचे को आधुनिक बनाने पर ध्यान केन्द्रित किया है। खेलो इंडिया ने लोगों के मन में खेल के प्रति धारणा में भी महत्वपूर्ण बदलाव किया है। यह खिलाड़ियों को उनके स्कूली जीवन के दौरान तैयारी करने के लिए प्रेरित करता है और उन्हे खेल में करियर बनाने के लिए उत्साहित करता है। यह 8 साल के कार्यकाल के लिए प्रतिवर्ष 5 लाख रुपए की छात्रवृत्ति प्रदान करता है। जो खिलाड़ियों को बहुत कम उम्र से अपने कौशल विकसित करने में मदद करेगा। हमारे भविष्य के खिलाड़ियों को सहायता प्रदान करेगा।

भारतीय जनता की बदलती मानसिकता ने देश में खेल उद्योग को एक नया जीवन दिया है। फिर भी, हमें अभी लंबा रास्ता तय करना है। जो लोग खेलों में भाग लेना और अपना करियर बनाना चाहते है, उनके लिए अधिक सामाजिक स्वीकृति और अवसर होना जरूरी है। हमें यह भी पता लगाना होगा कि बदलते समय के साथ खेल की भावना को कैसे जीवित रखा जाए। ऐसे कई बदलाव हैं जिन्हें भारतीय खेलों में वास्तव में प्रगति करने से पहले लागू करना होगा। उदाहरण के लिए, देश को खेल के बुनियादी ढांचे में निवेश करने और बेहतर प्रशिक्षण सुविधाएं जुटाने की जरूरत है। एथलीटों को भी अपने दृष्टिकोण में कुछ बदलाव करने की जरूरत है, जो अंतत: उन्हें अपनी पूरी क्षमता तक पहुँचने में मदद करेगा।

हाल के मनोवैज्ञानिक शोध में यह पाया गया कि स्टार एथलीट बनने की आकांक्षा वाले लोगों के सफल होने की संभावना बेहतर होती है। भारत हमेशा से एक खेल महाशक्ति रहा है। हाल के दिनों में भारत को ओलंपिक खेलों और राष्ट्रमंडल खेलों में अब तक के सबसे अधिक पदक जीतते देखना, कोई आश्चर्य की बात नहीं है। बेहतर अभ्यास, अच्छी सुविधाएं और भरपूर समर्थन से खिलाड़ियों ने हमेशा दुनिया के सामने अपनी योग्यता साबित की है। बदलाव की एक बयार जो 21 वीं सदी की शुरुआत में चलनी शुरू हुई थी, वह अब अधिकांश खेलों में फैल गई है। खिलाड़ी अन्य खेल श्रेणियों जैसे, मुक्केबाज़ी, कुश्ती, तीरंदाजी, हॉकी, बैडमिंटन, टेनिस आदि खेलों में गहरी रुचि ले रहे है और उनमें उत्कृष्ट प्रदर्शन भी कर रहे है।

राष्ट्रमंडल खेल 2022 में भारतीय एथलीटों ने 22 स्वर्ण, 16 रजत और 23 कांस्य पदक जीते है। संकेत सरगर, बर्मिंघम में पदक जीतने वाले वाले पहले भारतीय थे, जिन्होने पुरुषों की 55 किलोग्राम भारोत्तोलन स्पर्धा में रजत पदक जीता था । मीराबाई चानू कॉमन वेल्थ गेम्स 2022 में स्वर्ण जीतने वाली पहली भारतीय महिला थी। जबकी जेरेमा लालरिनुगा बर्मिंघम में शीर्ष पोडियम हासिल करने वाले पहले भारतीय व्यक्ति थे। सुधीर ने कॉमन वेल्थ गेम्स 2022 में पैरा - स्पोर्ट्स में भारत के लिए पहला स्वर्ण पदक जीता था। वे पुरुषों के पैरा पावरलीफटिंग में हेवीवेट वर्ग में चैंपियन बने।

हम मान सकते है कि भारतीय खेलों का स्वर्ण युग अभी शुरू हुआ है। 1948 में अपना पहला ओलंपिक पदक जीतने से लेकर 2023 में नीरज चोपड़ा द्वारा विश्व एथलीट चैंपियनशीप में स्वर्ण पदक जीतने तक भारत ने अपनी आजादी के बाद से खेलों में एक लंबा सफर तय किया है। तो चलिये भारत की प्रसिद्ध कहावत "खेलोगे कूदोगे बनोगे खराब" को बदलकर "खेलोगे कूदोगे बनोगे लाजवाब, पढ़ोगे लिखोगे बनोगे नवाब" को अपनाकर आनेवाली पीढ़ी को प्रोत्साहित करते है।

"पढ़ेगी मेरी निम्मो"

उत्तम कुमार पुरुषोत्तम
वरिष्ठ प्रबंधक
पटना अंचल

सरस्वती का पूरा ध्यान खाना बनाने में लगा हुआ था। कढ़ाई में जैसे ही उसने तेल डाला, उसके होठों पर हल्की सी मुस्कान उभर आई, तभी पीछे से आवाज आई - "माँ...।" सरस्वती ने हमेशा की तरह बिना मुड़े ही मुस्कुराते हुए कह दिया - "तेल कम ही डाला है बेटा।" निम्मो हमेशा माँ को खाना बनाते समय टोकती थी - "माँ तेल कम ही खाया करो, ज्यादा तेल खाने से स्वास्थ्य खराब होता है।"

सरस्वती अपने काम में मग्न थी। उसे ध्यान ही नहीं था की निम्मो अभी भी रसोईघर के दरवाजे में कंधा टिकाये खड़ी थी। सब्जी का छौंक लगाने के बाद जैसे ही वह मुड़ी, निम्मो ने एक हाथ पीठ के पीछे कर लिया। वह मुस्कुरा भी रही थी - "प्रवचन का असर हो रहा है माँ... है न..."

"चल हट पगली ...." कहते हुए सरस्वती ने निम्मो के गालों पर दोनों हाथों से थपकी दे दी।

सरस्वती ने देखा निम्मो का एक हाथ अभी भी पीछे की तरफ ही था।

"क्या छुपा रही हो... दिखाओ...."

निम्मो ने मुस्कुराते हुए माँ को देखा और हाथ पकड़कर रसोईघर से बाहर लेकर आ गयी। बरामदे में रखी कुर्सी पर माँ को बिठाया और खुद जमीन पर बैठ गयी। माँ के गोद में सर रख दिया। माँ निम्मो के बालों में हाथ फेरने लगी - "क्या बात है..... कुछ दिखाओगी भी या ऐसे ही पहेलियाँ बुझाओगी।"

निम्मो ने सर उठाया, "माँ.... पहले आखें बंद करो।"

सरस्वती ने आखें बंद की और निम्मो ने एक कागज़ का टुकड़ा उसके हाथों में रख दिया। सरस्वती ने आखें खोली। वह कागज़ पर छपे शब्दों को गौर से देखने लगी। इससे पहले की वह कुछ बोल पाती, खुशी के आंसू पलकों से बाहर आ चुके थे। निम्मो बी. एड. परीक्षा पास कर चुकी थी। उसने माँ का हाथ पकड़ लिया।

"आज तो खुशी का दिन है माँ....."

"हाँ बेटा.... पर आंसू तो ऐसे ही हैं की इंसान के सुख और दु:ख दोनों में साथ रहा करते हैं।" कहते हुए सरस्वती उठी और कमरे में चली गयी। पति की तस्वीर के सामने जाकर खड़ी हो गयी। मन ही मन कहा - "बेटी को देखने एक बार तो आ जाइये... देखिये कितनी बड़ी हो गयी है... अब तो पढ़ लिख कर घर परिवार और समाज में सम्मान भी हासिल कर लिया है।"

निम्मो भी पीछे आकर खड़ी हो गयी। माँ ने हाथ पकड़कर निम्मो को आगे किया - "पापा का आशीर्वाद ले लो बेटा।"

निम्मो ने तस्वीर के सामने हाथ जोड़कर सर झुका लिया उस तस्वीर के सामने जिसे माँ उसका पिता बताया करती थी। जिसे आज तक निम्मो ने देखा नहीं था। बस पिता का नाम हर बार उसके नाम के साथ जोड़ दिया जाता था।

अचानक रसोईघर से सब्जी जलने की गंध आयी। सरस्वती भागती हुई रसोईघर में गयी। झट उसने कढाई को चूल्हे से उतारा। सब्जी का कुछ हिस्सा कढाई से चिपक गया था। आज निम्मो के पापा उसे याद आ रहे थे - "ये होते तो कितना डाटते सब्जी जलने पर" लेकिन प्रकृति ने स्त्री को स्वभावत: धैर्यवान, सहिष्णु और सहनशील बनाया है, ताने सहते हुए, धोखा झेलते हुए भी वह परिवार रूपी वृक्ष की जड़ों को सींचती रहती है।

"माँ मुझे कॉलेज जाना है। जल्दी से नाश्ता बना दो।" कहते हुए निम्मो स्नानघर में चली गयी। निम्मो नाश्ता करके कॉलेज जा

चुकी थी। सरस्वती कुर्सी पर सर टिकाये बैठी थी। नाश्ते का समय निकला जा रहा था पर आज उसे भूख का एहसास ही नहीं हो रहा था। शायद खुशी के कारण या पति की याद बार बार आने के कारण। धीरे-धीरे उसकी आखों के सामने गुजरे वक्त की तस्वीरें चलचित्र के रूप में घूमने लगी थी।

सरस्वती, हाईस्कूल पास कर चुकी थी। उसके पिताजी को उसकी शादी की फिक्र होने लगी थी। वह आगे पढ़ना चाहती थी लेकिन कहते हैं न कि बेटी के जन्म लेते ही परिवार उसकी परवरिश की कम, शादी की बातें ज्यादा करने लगता है। अगर बेटी सावली हो तो और भी ज्यादा। शायद सरस्वती के साथ भी ऐसा ही था। पढने लिखने में वह तेज तर्रार थी। स्कूल में वह हमेशा अव्वल आती थी। लेकिन पिताजी को गाँव वालों की सोच के आगे नतमस्तक होना पड़ रहा था। कोई न कोई कहता ही रहता - “गोपाल! बेटी के हाथ अब पीले कर दो, जितनी जल्दी बेटी का घर बस जाये उतना ही अच्छा है।” कोई तो रंग रूप पर भी सरस्वती के बारें में तीखा मजाक कर देता - “और.... तुम्हारी बेटी सावली भी है। लड़केवालों ने जवाब देना शुरू कर दिया तो ... पछताओगे ...।” वे लोग ये नहीं सोचते कि बेटी कोई वस्तु नहीं होती कि जब मन चाहा अपना लिया और जब मन चाहा बिसरा दिया।

तब गांव में दसवीं से आगे की पढ़ाई भी नहीं होती थी। शहर में पढ़ाने के लिए पिताजी के पास पैसे भी नहीं थे। पिताजी को भी गांववालों की बातें ही अच्छी लगने लगी थी। उन्हें लगता था कि- “सही बात है... बेटी ज्यादा पढ़ लिख कर क्या करेगी....? चुल्हा चौका ही करेगी... चलो ब्याह ही देते हैं।” माँ बेचारी करती और कहती भी क्या। पुरूष प्रधान समाज में महिलाओं से सलाह मशविरा करना तो पुरूषों के लिए सर झुकाने जैसी बात थी। किसी को सरस्वती की उम्र की चिंता नहीं थी। कोई ये चर्चा नहीं करता कि बेटी का ब्याह कानूनन अट्ठारह वर्ष के बाद ही करनी चाहिए।

समाज के मिथकों से लड़ा नहीं जा सकता क्योंकि समाज की ये धारणाएँ ही जीवन की परिस्थितियाँ तय करती हैं। जहां समाज आपका विरोधी हुआ, वहीं से मूक प्रताड़ना का ऐसा चक्रव्युह शुरू हो जाता है कि अभिमन्यु सरीखे सूरमा भी दुस्साहसी कायरों के सामने वीरगति को प्राप्त हो जाते हैं।

सामाजिक दबाव में आखिरकार पिताजी को रिश्तेदारों की मदद से पास के गांव में एक लड़का पसंद आ गया। वह रंग रूप में सरस्वती से उन्नीस ही था। शहर में प्राइवेट नौकरी करता था। सरस्वती ने पिता के अरमानो की खातिर अपनी ख्वाहिशों की बलि चढ़ाना मंजूर कर लिया था। उसके मांग में विवाहित होने की निशानी चढ़ गयी। पति के साथ वह शहर आ गयी। निम्मो के जन्म लेने से पहले सबकुछ ठीक चल रहा था। पति सरस्वती को लेकर छुट्टी के दिन घूमने भी जाया करता था। लेकिन धीरे धीरे उसके व्यवहार में परिवर्तन आने लगा था। वह अक्सर दोस्तों की पत्नियों की सुन्दरता की चर्चा करने लगा था। अब ज्यादा से ज्यादा समय वह घर से बाहर रहने लगा था। बेटी निम्मो के साथ भी उसका लगाव ज्यादा नहीं था। शायद इसलिए कि निम्मो भी माँ की तरह साँवली थी।

निम्मो छह महीने की हो चुकी थी। अचानक एक दिन उसके मकान मालिक ने बताया कि उसका पति दूसरी औरत के साथ किसी दूसरे शहर में चला गया है और उसके लिए अगले छह महीने का किराया देकर गया है।

सरस्वती के तो पैरों तले जमीन खिसक गयी थी। शाम होते ही उसकी नजरें दरवाजे पर आकर जम गयी। मकान मालिक की बात पर उसे विश्वास नहीं हो रहा था, लेकिन रात बढ़ती जा रही थी। उसके घर की तरफ किसी की दस्तक नहीं हो रही थी। उसका मन घबराहट से भर रहा था। उधर, निम्मो भूख से परेशान होकर जोर-जोर से रो रही थी। सरस्वती असमंजस में थी, कि पहले अपने आंसू पोछे या बेटी के, पत्थर सी हो गयी थी सरस्वती। न टस... न मस....

स्त्री जिसके लिए त्याग करती है, उसके लिए वह काल से भी लड़ सकती है लेकिन अगर वही विश्वासघात कर दे तो उसे उसकी साँसों की आवाज भी भयावह लगने लगती है। त्याग की भावना जितनी ज्यादा होती है विग्रह का दर्द भी उतना ही अधिक होता है।

वो रात सरस्वती के लिए क़यामत की रात थी। उसकी जिन्दगी और मौत के बीच उसे बस एक पतले धागे जैसी दूरी दिखाई पड़ रही थी। लेकिन निम्मो... वह तो भगवान का वरदान थी उसके लिए... संसार के अनमोल शब्द "माँ" तो उसने ही दिया था, सरस्वती को अपनी जान से ज्यादा निम्मो की जिन्दगी जरूरी लगने लगी थी।

अगले दिन दोपहर होते- होते पिताजी उसके पास आ गए थे। शायद किसी ने उसके पिताजी को खबर कर दी थी क्योंकि गांव के कई लोग शहर में उसके पति के साथ काम किया करते थे। सरस्वती की आँखों के आँसू सूख चुके थे। वह पिताजी के सामने सिसक भी नहीं पा रही थी। नजरें बस निम्मो पर थी।

आज पिताजी को वास्तव में पछतावा हो रहा था। पिताजी सरस्वती को लेकर गाँव चले गए, माँ के गले लगकर जी भर रोई थी सरस्वती, बरसों बीत गए, सरस्वती का पति वापस नहीं आया। उसकी उम्र को देखते हुए माता- पिता ने उसे दोबारा शादी करने की गुजारिश की। सरस्वती ने साफ़ मना कर दिया। उसने ठान लिया था निम्मो उसकी पहली और आख़िरी संतान होगी।

निम्मो पाँच साल की हो गयी। पिताजी से कहकर उसने निम्मो का दाखिला गाँव के ही स्कूल में करा दिया था। अपनी माँ की ही तरह निम्मो भी पढ़ने लिखने में काफी होशियार थी। वक्त के थपेड़े सहते-सहते सरस्वती ने निम्मो को मैट्रिक पास करा दिया था। निम्मो अब सोलह बरस की थी। गाँव में आस-पास के लोग और रिश्तेदार जैसा की हमेशा कहते और करते आये थे, अब निम्मो की भी शादी के बातें करने लगे थे। सरस्वती मना कर दिया करती थी। वास्तव में उसकी आकांक्षा बढ़ गयी थी। वह निम्मो को कॉलेज में पढ़ाना चाहती थी। पर लोगों के ताने बढ़ने लगे थे। लोगों की ये बातें सरस्वती को कांटे की तरह चुभने लगी थी कि - "अभी उम्र है तो माँ इठला रही है .... दो चार साल बाद कोई दरवाजे पर पाँव नहीं रखेगा ब्याहने के लिए।"

सरस्वती ने सोच लिया था कि निम्मो उसकी तरह समाज की बेड़ियों में बंधकर नहीं रहेगी। बाल विवाह का शिकार नहीं बनेगी। बस चूल्हे- चौके में फँसकर जिन्दगी नहीं जियेगी। अपने पाँव पर खड़ी होकर आर्थिक रूप से आजाद रहेगी। पति के दुर्व्यवहार का निशाना नहीं बनेगी।

निम्मो को साथ लेकर सरस्वती शहर आ गयी। उसने एक प्राइवेट स्कूल में साफ़-सफाई का काम करना शुरू कर दिया था। रहने के लिए स्कूल प्रबंधन ने स्कूल में ही एक कमरा उपलब्ध करा दिया था। बेटी का नामांकन कॉलेज में हो गया था। सरस्वती काफी खुश हुई थी उस दिन। उसे लगा अब उसके अरमानों को पंख लगने शुरू हो गये थे।निम्मो को हाईस्कूल में जो साइकिल दी गयी थी, उससे वह प्रतिदिन कॉलेज का रास्ता नापने लगी। पढ़ाई में पूरा ध्यान लगा दिया था उसने, जबकि गाँव में उसकी हमउम्र सहेलियों की शादियाँ हो रही थी। सरस्वती गांववालों के तानों से दूर नया जीवन पाने की आस में दिन-रात मेहनत कर तरक्क़ी करती जा रही थी। निम्मो ने भी मेहनत से आगे बढ़ते हुए बी.एड. में एडमिशन ले लिया था। अब सरस्वती को निम्मो के हाथ में डिग्री मिलने का इन्तजार था। उसे लगने लगा था कि वह अपने सपनों से बस कुछ ही दूरी पर है।

बादलों की आहट भर से जैसे मयूर थिरकने लगता है, सूरज की किरणों की उपस्थिति मात्र से जैसे फूल खिलने लग जाते हैं, भोर का अंदाजा लगते ही जैसे पंछी कलरव करने लगते हैं, ठीक वैसी ही स्थिति सरस्वती के साथ होने लगी थी। मंजिल की आहट भर से ही उसकी खुशी बढ़कर दोगुनी चौगुनी हो गयी थी। लेकिन इस खुशी के बीच पुराने दर्द की टीस उसे पीड़ा से भर देती थी, जब उसके रंग रूप के कारण उसके पति ने उसे त्याग दिया था।

दरवाजे पर ठक-ठक की आवाज से सरस्वती की तंद्रा भंग हुई। निम्मो कॉलेज से वापस आ चुकी थी। सरस्वती ने भावुकता वश उसे गले से लगा लिया। निम्मो भी माँ की अपार खुशी को महसूस करने की कोशिश करने लगी थी।

"ग्रामीण क्षेत्रों में परिवर्तन की दास्ताँ लिखने वाली ऐसी अनेक गुमनाम महिलाएं हैं जिन्होने अपने दृढ़ संकल्प के बल पर रूढ़िवादिता से लड़कर परिवर्तन की लहर को सुनामी बनाने में अहम भूमिका निभाई है। अगर आप ध्यान से सुनो तो वर्तमान में महिला सशक्तिकरण की जो धारा बह रही है उसमें इन महिलाओं के बलिदान की प्रतिध्वनि गूँजती हुई सुनाई देगी।"

धर्मशाला : पर्वतों के बीच शांति का निवास स्थान

मेजर मनप्रीत सिंह
वरिष्ठ सुरक्षा प्रबंधक
लुधियाना आंचलिक कार्यालय

"जब हम पर्यटन स्थलों की यात्रा करते हैं तो हम अपने भीतर के आध्यात्म का भी तीर्थाटन कर रहे होते हैं, मंजिल तक पहुँचने की यात्रा में आने वाले शांतिभरे पड़ाव ही मानो हमारी आत्मा के लिए मोक्षविहार हैं, प्रकृति की गोद में विचरण की यह यात्रा ही वास्तव में जीवनयापन की भौतिक यात्रा से हमें एक दिव्य अवकाश उपलब्ध करवाती है।"

परिचय:

धर्मशाला, हिमाचल प्रदेश के कांगड़ा जिले में स्थित एक मनोरम पर्वतीय स्थल है, जो अपनी प्राकृतिक सुंदरता, आध्यात्मिक शांति, और धौलाधार पर्वत शृंखला के लिए प्रसिद्ध है। सन् 1846 में प्रथम एंग्लो-सिख युद्ध के दौरान ईस्ट इंडिया कंपनी ने इसे सिख साम्राज्य से ले लिया था। अंग्रेजी साम्राज्य के काल में यह अविभाजित पंजाब प्रांत का भाग था। ब्रिटिश राज के दौरान यह स्थान एक 'हिल स्टेशन' के रूप में लोकप्रिय हुआ। 1905 में कांगड़ा में आए भूकंप में यहाँ भारी तबाही हुई थी। आज़ादी के बाद भी यह एक पर्वतीय पर्यटन स्थल के रूप में बना रहा। सन् 1959 के दौरान भारत सरकार की अनुमति से दलाई लामा ने यहाँ तिब्बत की निर्वासित सरकार के साथ मैकलॉड गंज में शरण ली तथा नामग्याल बौद्ध विहार स्थापित किया, जिसमें 1970 ई. में तिब्बती अध्ययन पर एक प्रमुख पुस्तकालय का निर्माण भी कराया गया।

यात्रा का शुभारंभ:

लुधियाना से यात्रा की शुरुआत करते हुए हम होशियारपुर होते हुए हिमाचल प्रदेश में प्रविष्ट हुए तथा कांगड़ा शहर के बीच से गुजरते हुए धर्मशाला पहुंचे। इस सफर में हमें कुल 6 घंटे लगे और रास्ते में अच्छे रेस्तरां भी आए, जहां रूककर जलपान करते हुए सफर आराम से पूरा किया। गर्मियों के दौरान यहाँ का मौसम सुहाना रहता है और जैसे-जैसे हम धर्मशाला के करीब जाते हैं तो वातावरण में ठंडक बढ़ती जाती हैं तथा वहां के दृश्य भी बहुत सुंदर होते जाते हैं। यह रास्ता धौलाधार पर्वतमाला के मध्य स्थित कांगड़ा घाटी के मनोरम दृश्यों को बहुत शानदार ढंग से कवर करता है। कांगड़ा घाटी पर्वतीय प्राकृतिक सुंदरता और धार्मिक स्थानों के लिए प्रसिद्ध है। धर्मशाला पहुंचने के बाद हमने जोगीवाड़ा रोड पर अपने रुकने का प्रबंध किया। यहां प्रकृति के आंगन में रहना अपने आप में एक अद्वितीय अनुभव है। यहाँ के लोग अत्यंत सादगी और प्रकृति के साथ संतुलन में अपने जीवन को जीते हैं।

प्रमुख दर्शनीय स्थल:

सबसे पहले हम नोरबुलिंग्का इंस्टीट्यूट गए। यह आर्ट एवं कल्चर के अध्ययन का केंद्र है। यहाँ बुनाई, कढ़ाई, लकड़ी की नक्कासी के शानदार डिजाइन देखने को मिलते हैं। इस इंस्टीट्यूट की शिल्प कला बहुत आकर्षक एवं तिब्बती स्टाइल की है। इसके भीतर एक शॉपिंग सेंटर भी है जहां से आप अपनी पसंद की वस्तुएँ खरीद सकते हैं। इसके भीतर स्थित कैफ़े में आप घंटों बैठकर आध्यात्मिक, सांस्कृतिक और प्राकृतिक समागम के माहौल का लुत्फ उठा सकते हैं और यहाँ के स्वादिष्ट व्यंजन आपके इस अनुभव को और अधिक बेहतर बना देते हैं। धर्मशाला में घूमने के लिए यह सबसे अच्छी जगहों में से एक है। इसके बाद हम तिब्बत म्यूजियम गए, जहां तिब्बत और वहाँ की संस्कृति के बारे में विस्तृत जानकारी दी गई है। 'हिमालयन आर्ट म्यूजियम' भी धर्मशाला में आर्ट प्रेमियों के लिए एक दर्शनीय म्यूजियम है जिसमें 2500 वर्ष पुरानी सांस्कृतिक धरोहर को पेंटिंग्स के माध्यम से सँजो कर रखने की प्रथा का निर्वाह किया गया है। इन पेंटिंग्स को दो चित्रकारों मास्टर लोचो और

डॉ. सारिका सिंह द्वारा बनाया गया है। इन्हें थांग्का पेंटिंग्स कहते हैं और इन्हें बनाने में 7 वर्ष का समय लगा था।

मैकलॉड गंज

धर्मशाला का अद्वितीय आकर्षण है- मैकलॉड गंज। यह धर्मशाला से उत्तर दिशा में 9 किलोमीटर की दूरी पर स्थित है। हिमालय की गोद में बसा यह पर्वतीय पर्यटन स्थल एक शांत और सम्मोहक वातावरण की भूमि है। यहाँ आपको विविध संस्कृतियों का मिश्रण, आध्यात्मिक परिवेश और लुभावने प्राकृतिक परिदृश्य सहज ही दिखाई पड़ते हैं। यह स्थान रोमांचक यात्रा वाले उपन्यासों में वर्णित रहस्यमय प्राकृतिक स्थानों की झलक जैसा प्रतीत होता है। यहाँ की आध्यात्मिक आबो-हवा दुनिया भर के साधकों को आकर्षित करती है। त्सुगलगखांग मंदिर का परिसर, नामग्याल मठ और दलाई लामा का निवास यहाँ के आध्यात्मिक केंद्र के रूप में लोकप्रिय हैं, जो तीर्थयात्रियों और आगंतुकों का स्वागत शांत वातावरण और हवा में गूंजते लयबद्ध मंत्रों से करते हैं। पहाड़ी बौद्ध धर्म एवं तिब्बती संस्कृति का परिचायक नामग्याल मठ दुनिया को आध्यात्म की झलक पेश करता है। इसकी प्रार्थना ध्वजाएँ पहाड़ी पर हवा में लहराते हुए एक सिम्फनी का दृश्य बनाती हैं, जो आध्यात्मिक आभा का द्योतक प्रतीत होता है। यात्री अक्सर स्थानीय भिक्षुओं द्वारा आयोजित ध्यान सत्रों और शिक्षाओं में शामिल होकर आध्यात्मिक पर्यटन का आनंद लेते हैं। यहाँ का आध्यात्मिक पर्यटन हमें यह एहसास दिलाता है कि-

"हमारे धर्मगुरुओं के पदचिन्ह, हमें आध्यात्म की यात्रा पर आगे बढ़ते हुए, इस संसार के प्रत्येक कोने में पवित्रता की खोज करने का संदेश देते हैं, मानो हर सूर्योदय में, हर अजनबी की मुस्कुराहट में, हर संस्कृति में दिव्यता पवित्रता भरी हुई है। यह यात्रा सर्वसाधारण में दैवीयता खोज लेने की यात्रा है।"

मैकलॉड गंज में त्रिउंड एक प्रसिद्ध ट्रैकिंग (पर्वतारोहण) बिन्दु है। यहाँ से धौलाधार पर्वत रेंज की चोटियों का अद्भुत दृश्य दिखाई देता है। यह चढ़ाई बहुत अधिक कठिनाई वाली नहीं है और यहाँ अनेक यात्री गाते-गुनगुनाते हुए त्रिउंड चढ़ते हुए दिखाई देंगे। ऊपर पहुँचकर बर्फ से ढकी चोटियाँ और नीचे विशाल कांगड़ा घाटी का नज़ारा दिखाई देता है। मैकलॉड गंज में भाग्सूनाथ मंदिर भी एक प्राचीन पर्यटन का केंद्र है। इस मंदिर के प्रांगण में प्राकृतिक जलधारा से बना हुआ स्नानकुंड है। यह जलधारा भागसू झरने से होती हुई यहाँ पहुँचती है। यह झरना मैकलॉड गंज के नजदीक ही हरियाली से भरे पहाड़ों के बीच में है। पानी की चट्टान पर गिरने और कल-कल बहने की ध्वनि आपको मंत्रमुग्ध कर देती है। यहाँ की शीतल और स्फूर्तिदायक हवा हमारे प्राणों में एक नयी ऊर्जा का संचार करती प्रतीत होती है। वर्तमान में मैकलॉड गंज प्राकृतिक उपचार से स्वास्थ्य लाभ चाहने वालों की शरणस्थली बन गया है। यहाँ के अनेक योग केंद्र और वेलनेस रिट्रीट सुदूर विदेशों तक लोकप्रिय हो चुके हैं। पहाड़ों की ताजी हवा और शांत वातावरण योग और ध्यान का अभ्यास करने के लिए आदर्श परिस्थितियाँ

उपलब्ध करवाते हैं। साधक यहाँ आकर अपने मन, शरीर और आत्मा को लयबद्ध (अलाईन्मेंट) करने का प्रयास करते हैं।

हिमालय की गोद में बसा धर्मशाला और मैकलॉड गंज विविध संस्कृतियों, आध्यात्मिक मान्यताओं और प्राकृतिक रमणीय स्थलों की भूमि है। घूमने का आपका उद्देश्य चाहे जो भी हो, जिसमें आध्यात्मिक अनुभव, सांस्कृतिक भ्रमण, स्वास्थ्य लाभ, प्रकृति की गोद में विचरण या फिर आप भागती-दौड़ती रोज़मर्रा की जिंदगी से बाहर निकलकर राहत के कुछ पल जीना चाहते हो, यहाँ आकर आप अपेक्षा से अधिक ही पाएंगे। यहाँ आना तो मानो मोक्ष को अनुभव करना है, जब बर्फ से ढकी पहाड़ियों पर लालिमा से उगते सूर्य की सुनहरी किरणे पड़ती हैं तो उस दृश्य का कालजयी आकर्षण अद्भुत और अविस्मरणीय होता है।

आत्मा का संगीत बजता है सफर में,
शांति का संवाद गूँजता है सफर में,

आध्यात्म का साक्षात्कार होता है सफर में,
ध्यान-सा शून्यभाव होता है सफर में।

धरा, धर्म, प्रकृति, कर्म सबका मिलन होता है सफर में,

मुसाफिर से आए हैं हम,
मंजिल हमारी बस गई है अब सफर में।।

रुकना कभी मत

बिना घिसे सोना नहीं दमकता,
बिना तराशे नगीना नहीं चमकता,
हार मान लेना तेरी फितरत नहीं,
जीत न मिले, एसा तेरा मुकक्दर नहीं,
तू रुकना कभी मत ......
तू रुकना कभी मत ......

ख़ामोश रहकर आगे बढ़ना ही समझदारी है,
जीत कर सबको चुप कराना ही दिलेरी है,
सब्र की कश्ती में आगे बढ,
बिना रुके हर मुश्किल से लड़,
तू रुकना कभी मत ......
तू रुकना कभी मत ......

घड़ी का काँटा भी कभी-कभार रुक जाता है,
पर ज़िंदगी का पहिया चलता ही रहता है,
सब्र कर ज़रा, कर्म कर ज़रा,
वक्त के साथ चल, आगे बढ़ ज़रा,
तू रुकना कभी मत ......
तू रुकना कभी मत ......

नदी-सा बन जो निकले पहाड़ों को चीर कर,
बिना रुके अपने सपनों को साकार कर,
बन वो किरण जो कर दे हर ज़हां को रोशन,
आगे बढ़ और फ़तह कर हर उलझन,
तू रुकना कभी मत .....
तू रुकना कभी मत .....

मनस्वी सिंह परिहार
अधिकारी
उदयपुर मुख्य शाखा

पुस्तक समीक्षा

वैश्विक संदर्भों से भरा है कमलेश्वर का उपन्यास "कितने पाकिस्तान"

डॉ. पीयूष राज
मुख्य प्रबंधक (राजभाषा)
प्रधान कार्यालय

कमलेश्वर के सुप्रसिद्ध उपन्यास "कितने पाकिस्तान" को वर्ष 2004 में साहित्य अकादमी पुरस्कार से सम्मानित किया गया था। इस उपन्यास को हिन्दी के सर्वश्रेष्ठ उपन्यासों में शामिल किया जाता है। यद्यपि हिन्दी साहित्य एवं अन्य भारतीय भाषाओं के साहित्य में विभाजन आधारित उपन्यासों, कहानियों, रिपोतार्ज आदि की कोई कमी नहीं है तथापि कमलेश्वर के इस उपन्यास में एक नवीन शैली में, विभाजन की विभीषिका के साथ-साथ एक वैश्विक दृष्टिकोण का भी अत्यंत सफलतापूर्वक एवं बेहतरीन तरीके से प्रतिपादन प्राप्त होता है। उपन्यास में पाकिस्तान शब्द, पाकिस्तान नामक राष्ट्र के अतिरिक्त विभाजन एवं विभाजनकारी शक्तियों का भी प्रतीक है, चाहे वह जाति आधारित हो, नस्ल आधारित हो, रंग आधारित हो या धर्म आधारित हो।

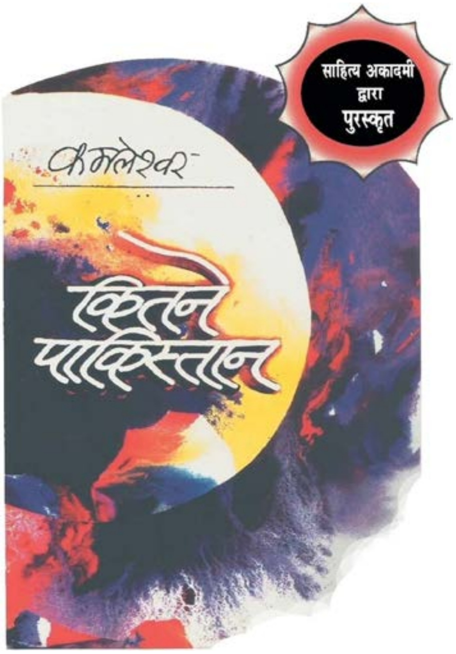

उपन्यास की कथा अदीब नामक पात्र के आस-पास घूमती है। अदीब शब्द वस्तुतः लेखक या यूं कहें कि लेखकों के समूह का प्रतीक है। अदीब की मित्रता विद्या नामक पात्र से रहती है परन्तु वे दोनों एक-दूसरे से दूर हो जाते हैं। उपन्यास में बहुत बाद में ज्ञात होता है कि विद्या का विवाह तय हो गया था परन्तु तेजी से बदलते घटनाक्रमों के बीच देश का विभाजन हो जाता है एवं परिस्थितिजन्य कारणों से वह पाकिस्तान पहुँच जाती है तथा वहीं जाकर नए धर्म के साथ उसके पड़ोसी से उसका विवाह होता है। उपन्यास के लगभग अंतिम हिस्से में जाकर कहानी आगे बढ़ती है एवं विद्या का बेटा पाकिस्तान के भारत स्थित दूतावास में तैनात किया जाता है तथा इसी संदर्भ में अपने भारत दौरे में विद्या, अदीब से मिलने आती है और यह अधूरी कहानी, अधूरी ही समाप्त हो जाती है। इस संदर्भ में सहज ही साहिर लुधियानवी का वह शेर याद आ जाता है कि - "वो अफसाना जिसे अंजाम तक लाना न हो मुमकिन, उसे इक खूबसूरत मोड़ देकर छोड़ना अच्छा।"

अदीब की दूसरी कहानी सलमा के साथ है। वस्तुतः इस कहानी ने ही उपन्यास को साहित्यिक रंगों से भर दिया है। इस कहानी में कल्पनाओं की ऊँची उड़ान है। इस कहानी में अनेक देशों का संदर्भ है परन्तु विशेष रूप से मॉरिशस की प्रकृति एवं संस्कृति का चित्रण मन को मोह लेने वाला है।

अदीब के अलावा उपन्यास में भारत-पाकिस्तान विभाजन की पृष्ठभूमि में बूटा सिंह और जेनिब की मार्मिक कहानी भी है जो दुर्भाग्यवश सुखांत नहीं है एवं ऐसा लगता है मानो यह कहानी असंख्य वैश्विक विभाजनों की विभीषिका को प्रतिपादित करने के लिए प्रतिनिधिस्वरूप उपन्यास में मौजूद है। इस कहानी का साहित्यिक रंग भी सराहनीय है।

विश्लेषण किया जाए तो निश्चत तौर पर कहा जा सकता है कि उपन्यास में कहानी प्रधान नहीं है। वैश्विक दृष्टिकोण एवं इतिहास की घटनाएं प्रधान हैं जिनका आम लोगों के जीवन पर असर दिखाया गया है। वैदिक काल, महाभारत काल आदि का जिक्र है परन्तु इतिहास का क्रम कड़ाईपूर्वक व्यवस्थित या कालक्रमवार नहीं है। शासन एवं समाज के व्यवस्थित अध्ययन के स्थान पर मानवीय भावनाओं को केन्द्र में रखा गया है। प्रेम, मित्रता, शांति आदि मानवीय संवेदनाओं

एवं मूल्यों को वैश्विक मानवीय सभ्यता की महती उपलब्धि के रूप में प्रस्तुत किया गया है। मानवीय अश्रु को सबसे अनमोल वस्तु बताया गया है।

उपन्यास में अदीब, न्यायाधीश की भूमिका में है। उसका अर्दली मोहम्मद अली है। सही माने में कहा जाए तो अदीब लेखकों की अदालत का प्रतिनिधित्व करता है जिसके समक्ष विभाजन की पृष्ठभूमि में बाबर, दारा शिकोह, औरंगजेब आदि पात्र आते हैं तथा उनकी सुनवाई होती है।

लेखक ने स्पष्ट शब्दों में प्रतिपादित किया है कि औरंगजेब द्वारा भारतीय जनता के बीच पैदा किया गया मानसिक विभाजन, देश के विभाजन की पृष्ठभूमि है। उपन्यास में औरंगजेब के समर्थन में सभी काल्पनिक कहानियों का सतर्क एवं पुरजोर खंडन किया गया है। उपन्यास में दारा शिकोह एवं औरंगजेब का प्रसंग अत्यंत विस्तृत है। कई इतिहासपरक प्रसंगों में लेखक ने एक कुशल शोधार्थी की भूमिका का निर्वाह किया है।

लेखक के अनुसार औरंगजेब की नीतियों से पैदा हुए मानसिक विभाजन और मुस्लिम लीग एवं अंग्रेजों की सुव्यवस्थित योजना के कारण राष्ट्र का विभाजन हुआ एवं लाखों लोगों को विस्थापन का दंश झेलना पड़ा। इसी विस्थापन का दंश उपन्यास के पात्रों को भी झेलना पड़ा है। विभाजन की कहानी के संदर्भ में कुछ ऐतिहासिक तथ्य सचमुच पाठक को विस्मय से भर देते हैं। जैसे विभाजन रेखा तय करने वाले रेड क्लिफ का ऐसा करने से पूर्व जमीनी दौरा न करना, उसको भूगोल की जानकारी न होना, पेशे से उसका वकील होना आदि।

पाकिस्तान निर्माण की पृष्ठभूमि में यह उपन्यास विश्व के अनेक भागों में विभाजनकारी तत्त्वों पर विचार करता है और विभाजन तथा हिंसा की निंदा करता है। विभाजनों के संदर्भ में सर्वप्रथम मानसिक स्तर पर विभाजन पैदा करने के विषय में बताया गया है परन्तु किसी मत को बलपूर्वक दबाने के स्थान पर लोकतांत्रिक मूल्यों से आलोचना द्वारा शांति तक पहुँचने को श्रेयस्कर बताया गया है।

वैश्विक उपनिवेशवादी एवं शोषणकारी तत्त्वों की घोर आलोचना की गई है तथा कई बार नए तथ्य एवं दृष्टिकोण पाठक को आश्चर्य में डाल देते हैं। उपनिवेशवादी तत्त्वों द्वारा स्थानीय संस्कृति तथा परंपराओं के संबंध में दुष्प्रचार का चित्रण उपन्यास में किया गया है। लेखक ने साहित्यिक फलक पर विश्व इतिहास एवं संस्कृति को भारतीय इतिहास एवं संस्कृति में पिरोकर एक बिलकुल नवीन काव्य संसार की रचना की है जिसमें करुण रस भी है, श्रृंगार रस भी और बीभत्स जैसे कम प्रयुक्त रस भी।

उपन्यास की विषयवस्तु की एक अन्य विशेषता यह है कि इसमें वर्तमान समय में देश-विदेश में घटित हो रही घटनाओं पर लेखक की पैनी नजर है। वह समसामयिक घटनाओं का महान् वेत्ता है। वह वर्तमान को पीछे खींचकर इतिहास में ले जाता है तथा समस्या एवं उसके समाधान का प्रतिपादन शोधार्थी की तरह करता है। तात्पर्य यह है कि यदि लेखक आज उपन्यास लिख रहा होता तो आज के घटनाक्रम से पूरी तरह से परिचित होता तथा आज की समस्या के विषय में निष्पक्ष एवं गहन ऐतिहासिक विश्लेषण प्रस्तुत करता तथा दूध का दूध और पानी का पानी कर देता। एक वाक्य में कहा जाए तो इस उपन्यास में राष्ट्रीय तथा अंतरराष्ट्रीय समसामयिक घटनाक्रमों, इतिहास एवं साहित्य का अद्भुत संमिश्रण है।

राष्ट्रीय के साथ-साथ अंतरराष्ट्रीय संदर्भों में भी लेखक का चरित्र-चित्रण निष्पक्ष है। इसका अंदाजा इसी तथ्य से लगाया जा सकता है कि लेखक ने परमाणु विज्ञान के राजनीतिक प्रयोग हेतु वैज्ञानिकों की भी कटु आलोचना की है। जापान के हिरोशिमा शहर को उपन्यास में मानव रूप में प्रस्तुत किया गया है तथा परमाणु विस्फोट से मूक हुए मानवीय चीत्कार को स्वर दिया गया है। उपन्यास में आद्योपांत मानवीकरण अलंकार का बेहतरीन प्रयोग देखते ही बनता है।

भाषा का प्रयोग पात्रों के अनुरूप है। मध्यकालीन भारतीय इतिहास के संदर्भ में उर्दू, फारसी आदि शब्दों का अधिक प्रयोग है। कई स्थानों पर संस्कृतनिष्ठ शब्दों का भी प्रयोग है। विदेशी संदर्भों एवं पात्र के अनुसार अंग्रेजी के वाक्य भी देवनागरी लिपि में लिखे गए हैं।

उपन्यास के संवाद वैश्विक स्तर के किसी नाटक या कई बार पटकथा जैसे भी लगते हैं। संवाद और मानवीकरण, उपन्यास के ऐसे वाहन बने हैं जिन पर आरूढ़ होकर यह उपन्यास अपने धरातल से ऊँची उड़ान भरता हुआ ज्ञानात्मक अभिव्यक्ति का निकष बन

गया है। यदि यह कहा जाए कि यह उपन्यास, इतिहास आदि विषयों को वैश्विक मानवीय मूल्यों के साथ संजोकर पढ़ने-पढ़ाने की पद्धति का बेहतरीन उदाहरण है तो यह अतिशयोक्ति न होगी। इसमें न तो पूर्ण रूप से इतिहास है और न ही कपोलकल्पित कहानी, अपितु इसमें किस्सागोई शैली में वैश्विक मानवीय संवेदनाओं की ज्ञानपरक अभिव्यक्ति का अद्भुत सौन्दर्य है।

उपन्यास में लेखक के दैनिक कामकाज एवं कहानी लेखन की रुचि के बीच एक द्वन्द्व दिखाई देता है। लेखक अपनी रुचि के अनुसार अपनी कहानियों के करीब रहना चाहता है परन्तु उसका अर्दली, लेखक को उसके जीविकोपार्जन के कार्य की ओर प्रवृत्त करता है। उपन्यास के इस प्रकार के प्रसंग, समस्त कामगार वर्ग के प्राथमिकता चयन के बीच जीवन जीने के संघर्ष की सुंदर व्यंजना करते हैं।

सूक्ति और अनमोल वचन, पूरे उपन्यास में भरे पड़े हैं। इन्हें पढ़कर ऐसा लगता है मानो ये वैश्विक प्रयोग के लिए हैं। जैसे - "खामोशी की गहराई ही शायद लगाव का पैमाना था", "शायद पछताने की ताकत रखनेवाली संस्कृतियां ही जीवित रहती हैं", "इतिहास रुका हुआ था। उसे कोई पछतावा नहीं था। पछताता तो इन्सान है, इतिहास नहीं।", "नफ़रत और खौफ़ की बुनियाद पर बनने वाली कोई चीज़ मुबारक नहीं हो सकती...", "ग़लत फ़ैसलों से हिंसा उपजती है और हिंसा से अपसंस्कृतियाँ और रक्तपात...", "कोई जिन्दगी स्वतंत्र नहीं है, वह आगे और पीछे जुड़ी हुई है", "मुर्दों के बीच रहते-रहते क्या आप जिन्दगी को पहचानना भी भूल गए?" आदि।

उपसंहार

हिन्दी साहित्य में कमलेश्वर के इस उपन्यास को "प्रयोगवाद" के अंतर्गत रखा जाता है। प्रयोगवाद वह विचारधारा है जिसमें पहले से प्रतिपादित सत्य का परीक्षण किया जाता है तथा नये प्रतिमान स्थापित किये जाते हैं। इसमें परम्परा के स्थान पर व्यक्ति के अपने प्रत्यक्ष अनुभवों को अधिक महत्व दिया जाता है। उपन्यास को पढ़ने के बाद यह स्पष्ट हो जाता है कि अपने वैश्विक एवं ऐतिहासिक परीक्षणों और विभाजन के विभिन्न संदर्भों में मानवों के कटु एवं मार्मिक अनुभवों की अभिव्यक्ति में कमलेश्वर इतने सफल हुए हैं कि उन्होंने प्रयोगवाद को निकष पर पहुँचा दिया है। "वसुधैव कुटुम्बकम्" एवं आज के समय में विभिन्न संदर्भों में मानवीय मूल्यों के धरातल पर वैश्विकता एकता की आवश्यकता के परिप्रेक्ष्य में, साहित्य के सुकोमल, सहज, सरल एवं सुकुमार माध्यम से, शांति के संदेश को हृदयंगम कराने के लिए यह उपन्यास निश्चित तौर पर श्लाघनीय है।

हार कभी, मानो नहीं

जब जन्म लिया इस धरती पर,
ना बोलना आता था, ना चलना आता था,
रूक-रूक के बोलना सीखा, गिर-गिर कर चलना सीखा,
लेकिन, हार कभी मानी नहीं।

कोशिशें बहुत की दुनिया को समझने की,
क्या अच्छा, क्या बुरा यह परखने की,
ना अच्छे की समझ लगी और ना बुरे की,
लेकिन, हार अभी मानी नहीं।

छल-कपट है क्या, यह कभी समझ न पाया,
राह जैसी भी मिली, उस पर कदम बढ़ाया,
सबको अपने-सा समझकर चलता रहा,
लेकिन, हार कभी मानी नहीं।

मुस्कुराया तो, ज़िंदगी की राह खूबसूरत लगी,
क्या पाया क्या खोया, ऐसी भावना भी जगी,
ठोकर खाई, लड़खड़ाया, गिरा, उलझा... फिर सुलझा,
लेकिन, हार कभी मानी नहीं।

जीवन की इन मुश्किल राहों में साथी मिले,
जिन्होंने छोड़ा नहीं कभी साथ मेरा,
बिना संकोच के हमेशा थामे रहे हाथ मेरा,
शायद इसीलिए, हार कभी मानी नहीं।

भरत मोहन राठी
लिपिक
ऋण निगरानी विभाग

वित्तीय प्रोद्योगिकी (फिनटेक) के आज और कल का आकलन

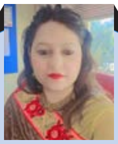

नीतू सिंह
मुख्य प्रबंधक एवं संकाय
एमडीआई बेलापुर

तकनीकी नवाचार आदिकाल से ही मानव जीवन के सभी पहलुओं को प्रभावित एवं परिवर्तित करता आ रहा है। पहिये के आविष्कार ने आदिमानव को गति प्रदान की, कृषि उपकरणों के विकास ने भोजन की समस्या का समाधान किया और फिर साम्राज्यों के विस्तार की प्रतिस्पर्धा ने, युद्ध उपकरणों के विकास के माध्यम से आकाश और पाताल नाप देने की क्षमता वाली प्रौद्योगिकी तक पहुँच सुनिश्चित की। नवाचार की इस अविरल धारा में आज हम इतनी प्रगति कर चुके हैं कि हमारे मन में किसी कार्य का विचार आने से लेकर उसके पूरे होने तक की अवधि पल भर से भी कम की रह गई है। मौजूदा परिदृश्य में तकनीकी नवाचार से वित्तीय जगत में आई क्रांति चर्चा का विषय बनी हुई है। वित्त सेवाओं के इस उद्दामी संसार में, प्रौद्योगिकी अब कोई सहायक वस्तु नहीं रही, अपितु यह इसकी धुरी बन चुकी है। वित्तीय प्रौद्योगिकी, या फिनटेक, एक जादू की तरह है जो वित्तीय प्रबंधन को सहज, तीव्र और कई बार मज़ेदार भी बना देती है। वित्त और प्रौद्योगिकी का यह मिश्रण व्यक्तियों और व्यवसायों के वित्तीय सेवाओं के साथ तालमेल को एक नया आकार दे रहा है, जो पारंपरिक मॉडल को आदर्श आधुनिक मॉडल में परिवर्तित कर रहा है। वित्तीय उद्योग में फिनटेक एक क्रान्तिकारी शक्ति के रूप में उभरा है, जिसने हमारे प्रबंधन, निवेश और लेन-देन के तरीके को पुनः परिभाषित किया है।

फिनटेक का वर्तमान और भविष्य, नवाचार, दक्षता और पहुंच के एक गतिशील कैनवास को दर्शाता है, एक ऐसे युग की शुरुआत करता है जहाँ वित्तीय लेन-देन केवल संव्यवहार नहीं बल्कि प्रौद्योगिकी के निर्बाध एकीकरण द्वारा निर्देशित अनुभव हैं। इस लेख में फिनटेक के वर्तमान अनुप्रयोगों पर प्रकाश डालते हुए, वर्तमान वित्तीय परिदृश्य पर इसके प्रभाव और भविष्य की संभावनाओं पर नज़र डालते हैं, जो हमारे वित्तीय पारिस्थिति तंत्र के ढांचे को फिर से परिभाषित करने के कार्य को अंजाम दे रहा है। हम इस तकनीकी विषय पर ज्यों-ज्यों हम आगे विचार करते हैं, फिनटेक न केवल एक उपकरण के रूप में उभरता हुआ प्रतीत होता है, बल्कि बदलाव का एक उत्प्रेरक भी दिखाई पड़ता है, जो एक ऐसे भविष्य की झलक पेश करता है, जहाँ वित्तीय सेवाएं अधिक स्मार्ट, परस्पर एकीकृत और अंततः अधिक समावेशी होंगी। आइए फिनटेक के वर्तमान चमत्कारों और भविष्य की संभावनाओं पर विमर्श करें।

वर्तमान में फिनटेक की चमत्कारिक उपलब्धियां निम्नलिखित है:

- **टैप करें, क्लिक.... बस हो गया:** आपने देखा है कि किस प्रकार एक साधारण से टैप या एक क्लिक से पैसों का भुगतान हो जाता हैं? फिनटेक ने इसे संभव बनाया है और हमारे लेन-देन करने के तरीके में क्रांतिकारी परिवर्तन किया है। हमारे फोन पर ऐप्स का उपयोग करने से लेकर कार्ड लहराने तक, यह जादू की तरह है - त्वरित, आसान और सुरक्षित। डिजिटल वॉलेट, मोबाइल बैंकिंग ऐप और संपर्क रहित भुगतान अनिवार्यता बन गए हैं, जो उपयोगकर्ताओं को निर्बाध और सुरक्षित वित्तीय लेन-देन की सुविधा देते हैं।

- **आपका मुनीम आपकी मुट्ठी में:** फिनटेक सिर्फ पैसे खर्च करने की ही सुविधा नहीं देता, बल्कि यह जानकारी भी देता है कि आपका पैसा कहाँ जाता, कहाँ से आता है। फिनटेक एप्लिकेशन उपयोगकर्ताओं को उनकी खर्च करने की आदतों, बजट उपकरण, निवेश के बारे में वास्तविक समय में जानकारी प्रदान करते हैं और

यहाँ तक कि बचत करने के स्मार्ट तरीके भी सुझाते हैं। ये उपकरण व्यक्तियों को अपने वित्त पर नियंत्रण रखने और संज्ञानात्मक निर्णय लेने के लिए सशक्त बनाते हैं। यह हमारी जेब में एक वित्तीय सुपरहीरो होने जैसा अनुभव है।

- **चुटकियों में निवेश:** अब निवेशक बनने के लिए आपको सूट और टाई की जरूरत नहीं है। फिनटेक, रोबो-परामर्शदाताओं को तैनात करता है। ये स्वचालित प्लेटफ़ॉर्म बाज़ार के रुझानों का विश्लेषण करते हैं और वैयक्तिकृत निवेश रणनीतियों की अनुशंसा करते हैं, जिससे धन प्रबंधन जनता के लिए अधिक सहज और सुलभ हो जाता है। इसके अलावा ये डिजिटल मनी कोच की तरह हैं जो आपको बिना जटिल शब्दजाल उलझाए बिना निवेश करने में मदद करते हैं।

- **ब्लॉक चेन और क्रिप्टोकरेंसी:** क्या आपने बिटकॉइन जैसी डिजिटल मुद्रा के बारे में सुना है? इसके पीछे फिनटेक है. ब्लॉकचेन तकनीक, बिटकॉइन जैसी क्रिप्टोकरेंसी की रीढ़ है, इसने वित्तीय संपत्तियों को स्थानांतरित करने और रिकॉर्ड करने के विकेंद्रीकृत और सुरक्षित तरीके पेश किए हैं। क्रिप्टोकरेंसी वैकल्पिक निवेश के रूप में स्वीकार्यता प्राप्त कर रही है और पारंपरिक बैंकिंग प्रणालियों को चुनौती दे रही है। ये डिजिटल ख़जाने की तरह हैं, और फिनटेक वह मानचित्र है जो हमें पैसे की इस नई दुनिया में नेविगेट करने में मदद करता है।

- **चैटबॉट सहायक:** चैटबॉट्स एआई-संचालित आभासी सहायक होते हैं जो बैंकिंग ऐप्स के भीतर रहते हैं। ये चैटबॉट प्रश्नों का उत्तर देते हैं, वास्तविक समय में सहायता प्रदान करते हैं और यहाँ तक कि वित्तीय सलाह भी देते हैं, जिससे बैंकिंग अनुभव संवादात्मक और उपयोगकर्ता के अनुकूल हो जाता है।

फिनटेक के उपयोग से भविष्य की अवधारणाएँ:

- **क्लाउड में पैसा:** फिनटेक क्लाउड तकनीक की ओर अग्रसर है जहां एपीआई नामक तकनीक द्वारा संचालित ओपन बैंकिंग, हमें एक ही स्थान पर हमारी सभी बैंकिंग जरूरतों तक पहुंचने की सुविधा दे सकती है। अब एक ऐप से दूसरी ऐप में जाने की जरूरत नहीं होगी, सब कुछ एकीकृत है। एपीआई (एप्लिकेशन प्रोग्रामिंग इंटरफेस) द्वारा समर्थित ओपन बैंकिंग की उपयोगिता तेजी से बढ़ रही है। यह वित्तीय संस्थानों को नवाचार और प्रतिस्पर्धा को बढ़ावा देते हुए ग्राहक डेटा को सुरक्षित रूप से साझा करने की अनुमति देता है। ग्राहक अधिक वैयक्तिकृत और ग्राहक परस्पर एकीकृत बैंकिंग अनुभव का आनंद ले सकते हैं।

- **स्मार्ट बैंकिंग सहायक:** कल्पना कीजिए कि आपके पास एक बैंकिंग सहायक है जो आपको अच्छी तरह से जानता है। भविष्य में, फिनटेक हमारे लिए सुपर-स्मार्ट बैंकिंग ऐप्स ला सकता है जो हमारी ज़रूरतों को समझेंगे, सवालों के जवाब देंगे और धन संबंधी मामलों में हमारा मार्गदर्शन करेंगे।

- **रोबोट के साथ निवेश की बात:** यह एक विज्ञान-फाई फिल्म की तरह लगती है, लेकिन यह भविष्य में संभव है। आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस और मशीन लर्निंग हमें बेहतर वित्तीय निर्णय लेने में मदद कर सकते हैं और वर्चुअल मनी मित्र हमारी मदद कर सकते हैं। एआई और मशीन लर्निंग के एकीकरण से ग्राहक सेवा, जोखिम प्रबंधन और धोखाधड़ी का पता लगाने में वृद्धि होने की उम्मीद है। चैटबॉट, वर्चुअल असिस्टेंट और प्रेडिक्टिव एनालिटिक्स अधिक कुशल और प्रतिक्रियाशील बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाएंगे।

- **बैंक से पाओ डिजिटल मुद्रा:** वित्तीय प्रौद्योगिकी के लगातार विकसित हो रहे परिदृश्य में, "बैंक से डिजिटल मुद्रा" मिलने की संभावना हमारी धारणा, लेन-देन और बातचीत के तरीके में क्रांतिकारी बदलाव लाने के लिए तैयार है। यह अवधारणा एक ऐसे भविष्य की कल्पना करती है जहाँ पारंपरिक कागजी मुद्रा सीधे केंद्रीय बैंकों द्वारा जारी डिजिटल रूप ले लेती है। नकदी रहित अर्थव्यवस्थाओं और बढ़ी हुई वित्तीय दक्षता के युग की शुरुआत हो चुकी है। सरकारें हमारे नियमित पैसे का डिजिटल संस्करण बनाना शुरू कर चुकी हैं। यह हमारे फोन पर डिजिटल रुपया, डॉलर या यूरो रखने जैसा है। जो सुरक्षित और तेज़ है तथा जेब कटने का खतरा भी नहीं है।

- **विकेंद्रीकृत वित्त:** विकेंद्रीकृत क्रेडिट, उधार और ट्रेडिंग प्लेटफॉर्म बनाने के लिए ब्लॉकचेन का लाभ उठाकर पारंपरिक वित्तीय सेवाओं में एक आदर्श बदलाव का प्रतिनिधित्व करता है। इसका लक्ष्य वैश्विक स्तर पर अधिक समावेशी और सुलभ वित्तीय सेवाएं प्रदान करना है।

- **रेगटेक (नियामक प्रौद्योगिकी):** जैसे-जैसे वित्तीय नियम अधिक जटिल हो रहे हैं, कुशल अनुपालन करने वाले समाधानों की आवश्यकता बढ़ती जाती है। रेगटेक नियामक प्रक्रियाओं को सुव्यवस्थित करने के लिए प्रौद्योगिकी का उपयोग करता है, यह सुनिश्चित करता है कि वित्तीय संस्थान अनुपालन आवश्यकताओं का निर्बाध रूप से पालन करें।

"नवाचार की नाव पर सवार होकर मौजूदा फिनटेक उपकरण वित्तीय सुगमता का मार्ग प्रशस्त कर रहे हैं। हम फिनटेक रूपी चाबी से भावी वित्तीय सुविधाओं की तिजोरी को खोलकर डिजिटल समृद्धि के भविष्य में प्रवेश कर रहे हैं।"

फिनटेक का वर्तमान और भविष्य नवाचार, दक्षता और समावेशिता के साथ जुड़ा हुआ है। फिनटेक हमारे लिए आधुनिक वित्तीय जादू की छड़ी है। जैसे-जैसे प्रौद्योगिकी आगे बढ़ रही है, फिनटेक वित्तीय परिदृश्य को नया आकार देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है। डिजिटल समाधानों का एकीकरण, उभरती प्रौद्योगिकियों की खोज के साथ मिलकर, फिनटेक को वित्त के एक नए युग की शुरुआत करने में एक प्रेरक शक्ति के रूप में स्थापित करता है। इन परिवर्तनों को अपनाने से न केवल उपयोगकर्ता अनुभव में वृद्धि होगी बल्कि एक अधिक लचीला और सुलभ वैश्विक वित्तीय पारिस्थितिकी तंत्र भी विकसित होगा। यह हमारे धन संभालने के तरीके को बदल रहा है, इसे सरल, स्मार्ट और अधिक सुलभ बना रहा है। जैसे-जैसे हम भविष्य में कदम रख रहे हैं, फिनटेक और भी अधिक सुविधाएं उपलब्ध करा रहा है जैसे- सुपर स्मार्ट बैंकिंग, चैटबोट से लेकर हमारी अपनी सरकारों के डिजिटल मुद्रा आदि।

भ्रष्टाचार

भ्रष्ट आचरण है कुविचार
गलत राह ना करें कभी स्वीकार,
भ्रष्टाचार से देश होता है लाचार
रुके तरक्की, फैले अनाचार,
किसी का हक किसी और के हाथ
कोई आदत से, कोई शौक से,
तो कोई मजबूरी में देता है
भ्रष्टाचार का साथ,
परंतु रहे हमेशा ध्यान
रिश्वत चोरी और घूसखोरी है मृगतृष्णा,
भ्रम का मायाजाल बिछा कर
सुंदर भविष्य के सपने दिखला कर,
जीवन में कर दे स्याह अंधेरा
जहां से वापसी की राह है मुश्किल,
ऐसी दलदल में ये हमें फँसा कर
मजबूरी का फायदा उठा कर,
हमारे ईमान की कीमत लगा कर
भ्रष्टाचार कर देता है, देश को खोखला,
सतर्क रहें, चौकस रहें, रहें हमेशा सावधान
और बचा कर रखें अपना स्वाभिमान,
भ्रष्टचार मुक्त देश हो अपना
विकसित भारत है हम सबका सपना।

अनुप्रिया भारती
अधिकारी
वित्तीय समावेशन विभाग
भागलपुर आंचलिक कार्यालय

कुछ रोचक बातें...

दिव्यांश मिश्र
राजभाषा अधिकारी
प्रधान कार्यालय

1. राजस्थान के मशहूर लोक नृत्य कालबेलिया नृत्य को वर्ष 2010 में यूनेस्को द्वारा मान्यता प्रदान की गई थी।
2. क्या आपको पता है कि इडली डोसे के साथ चाव से खाए जाने वाले सांबर का नाम छत्रपति शिवाजी के पुत्र के नाम पर रखा गया था। किम्वदंति के अनुसार छत्रपति शिवाजी के बड़े बेटे तथा उत्तराधिकारी श्री संभाजी या सांबा जब तंजावुर का दौरा कर रहे थे तो शाही रसोइये ने प्रतिष्ठित अतिथि के सम्मान में एक नया व्यंजन बनाया, जिसे सांबर के नाम से जाना जाने लगा। इस बारे में यह लोककथा भी प्रचलित है कि राजा भोंसले का मुख्य रसोइया जब छुट्टी पर था तो उस समय छत्रपति संभाजी ने दाल का एक मिश्रण बनाया, जिसे सांबर कहा गया।
3. भारत के उत्तर-पूर्व के 7 राज्यों यथा अरुणाचल प्रदेश, असम, मेघालय, मणिपुर, मिज़ोरम, नागालैंड तथा त्रिपुरा को सात बहने (सेवेन सिस्टर्स) कहा जाता है तथा सिक्किम राज्य को इनका भाई (ब्रदर) कहा जाता है। सिलीगुड़ी कॉरिडॉर के कारण सिक्किम राज्य उन सात राज्यों से जुड़ा हुआ नहीं है।
4. वर्ष 1875 में स्थापित मुंबई स्टॉक एक्स्चेंज जो मुंबई के दलाल स्ट्रीट पर स्थित है एशिया महाद्वीप का सबसे पुराना स्टॉक एक्स्चेंज है तथा विश्व के सबसे पुराने स्टॉक एक्स्चेंज में इसका स्थान दसवां है। इसकी स्थापना सूत व्यापारी श्री प्रेमचंद रायचंद द्वारा की गई थी।
5. वर्ष 2023 में 'साहित्य का शहर' में यूनेस्को के रचनात्मक शहरों की सूची में भारत के कोझिकोड शहर को शामिल किया है, जबकि ग्वालियर शहर को 'संगीत का शहर' की सूची में शामिल किया गया है।
6. फिरौन रामसेस द्वितीय की ममी की नाक में काली मिर्च भरी हुई पायी गयी थी, जो 3000 साल पहले भारत और मिस्र के बीच व्यापार का घोतक है। उस समय कालीमिर्च को चाँदी के समान कीमती माना जाता था।
7. अधिकतर देशों में केवल एक राष्ट्रगान होता है, लेकिन न्यूज़ीलैंड ऐसा देश है जिसके दो राष्ट्रगान है।
8. भारत की मुद्रा हेतु 'रुपया' शब्द की उत्पत्ति संस्कृत शब्द 'रूप्यक' से मानी गई है, जिसका अर्थ है 'गढी हुई चांदी' अथवा किसी छवि या सिक्के के रूप में मुद्रित कोई धातु।
9. क्या आप जानते हैं कि हेल्मेट का रंग उसे पहनने वाले के पेशे को दर्शाता है जैसे कि सफेद रंग - प्रबंधक, फोरमैन, इंजीनियर या पर्यवेक्षक के लिए होता है; हरा रंग - सुरक्षा निरीक्षकों, नए या परिवीक्षाधीन कर्मचारियों के लिए; पीला रंग - सामान्य मजदूरों या मिट्टी हटाने वाले ऑपरेटरों के लिए; भूरा रंग - वेल्डर जैसे अधिक तापमान के उपकरणों के साथ काम करने वाले लोगों के लिए और नीला रंग - कारपेंटर, इलेक्ट्रीशियन और अन्य तकनीकी ऑपरेटरों के लिए होता है।
10. अपोलो 16 के अंतरिक्ष यात्री चार्ल्स ड्यूक ने चंद्रमा की सतह पर अपने परिवार की एक फ्रेमयुक्त तस्वीर छोड़ी थी, जिसके पीछे लिखा था: "यह पृथ्वी ग्रह के अंतरिक्ष यात्री चार्ली ड्यूक का परिवार है जो 20 अप्रैल 1972 को चंद्रमा पर उतरे थे।" चार्ल्स ड्यूक चंद्रमा पर चलने वाले सबसे कम उम्र के व्यक्ति थे, उनकी उम्र 1972 में 36 वर्ष थी।

संगृहीत

प्रबंधन विकास संस्थान, बेलापुर में विशेषज्ञ राजभाषा अधिकारियों हेतु उन्नत प्रशिक्षण कार्यक्रम

बैंक ऑफ इंडिया, प्रधान कार्यालय, राजभाषा विभाग द्वारा विशेषज्ञ राजभाषा अधिकारियों हेतु दो दिवसीय उन्नत प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन दिनांक 19 एवं 20 जनवरी, 2023 को प्रबंधन विकास संस्थान, सी.बी.डी बेलापुर, नवी मुंबई में किया गया।

भारत सरकार, राजभाषा विभाग के दिशानिर्देशों का पालन करते हुए दिनांक 19 जनवरी, 2024 को प्रथम सत्र में राजभाषा विभाग द्वारा सी-डैक के माध्यम से निर्मित मेमोरी आधारित अनुवाद टूल "कंठस्थ 2.0" का प्रशिक्षण अधिकारियों को दिया गया। उक्त प्रशिक्षण कैनरा बैंक के वरिष्ठ प्रबंधक (राजभाषा) श्री षोजो लोबो जी द्वारा दिया गया। श्री लोबो जी द्वारा कंठस्थ टूल की उपयोगिता, उसकी बारीकियां एवं कंठस्थ जैसे टूल द्वारा तकनिकी की उपयोगिता पर विस्तृत चर्चा की गई।

दूसरे सत्र में हिन्दी सिनेमा के विख्यात कलाकार एवं काव्य संग्रह "अखिलामृतम्" के लेखक श्री अखिलेन्द्र मिश्र जी द्वारा "हिन्दी की वैज्ञानिकता एंव व्यापकता" विषय पर व्याख्यान दिया गया। श्री अखिलेन्द्र जी द्वारा हिन्दी की वैज्ञानिकता को समझाते हुए हिन्दी के अक्षरों के उच्चारण से होने वाले लाभ को बताया गया।

प्रशिक्षण के दूसरे दिवस अर्थात् दिनांक 20 जनवरी, 2024 को मैन्युअल अनुवाद का प्रशिक्षण भारत सरकार, केन्द्रीय अनुवाद ब्यूरो के उप निदेशक श्री नरेश कुमार जी द्वारा लिया गया। श्री नरेश जी ने अनुवाद को मूल का निकटतम प्रतिनिधि बताते हुए मैन्युअल अनुवाद की बारीकियों को भलि-भांति समझाया।

दिनांक 19/01/2024 को श्री सुब्रत कुमार, कार्यपालक निदेशक महोदय ने सभी राजभाषा अधिकारियों को संबोधित किया तथा इस अवसर पर राजभाषा शील्ड योजना 2022-23 के तहत पुरस्कार वितरित किए गए।

बेटी की विदाई.....

सबकुछ था मानो बदल गया,
ज्यों दान मेरा तूने किया।
हर एक फेरे के साथ लगा,
कुछ पाया, कुछ था छूट रहा।
कहीं हँसी ठिठोले गूंज रहे,
जो प्यारा था सब रुठ रहा।

जब अश्रुपूर्ण हो रहे थे सब,
मन मेरा विदीर्ण हो रहा था तब।
कैसे देहरी पार करूं,
बचपन की यादें खींचे,
मैया, बाबा, भैया, बहना,
आंखों से बगिया सींचे।

जिसको इतना लाड़ किया,
जो तेरी परछाई है,
खुद से उसको दूर किया,
यह कैसी रीत निभाई है।

विलग होऊं तुमसे कैसे,
दिल देता नहीं गवाही है।
इस मन को कैसे समझाऊं,
जब आँखें भी भर आई हैं।

विरह की ऐसी बेला में,
मन साहस था यूँ जुटा रहा,
हर स्वर में था यह गूंज रहा--
तूने जीवन की प्रथा निभाई है ।।

श्रुति रानी
अधिकारी
बोकारो आंचलिक कार्यालय

"बैंक ऑफ इंडिया" - रिश्तों की जमापूँजी"

यही परिचय हमारा है, यही खूबी हमारी है।
ग्राहकों का भरोसा ही तो असली पूँजी हमारी है।
प्रयास यही है कि सेवा दे सके उत्कृष्ट सभी को हम,
इससे बढकर खुशी नहीं कोई दूजी हमारी है।

विश्व के पाँच खंडो में बसा परिवार हमारा है।
जहाँ तक भी नज़र जाए, वहाँ कारोबार हमारा है।
सदी से भी है लंबा तय किया सफर अब तक,
हर जगह, हमेशा लोगो ने हमें स्वीकारा है।

हमें है गर्व कि देश के नाम से ही नाम हमारा है।
समर्पित देश की सेवा में रहना काम हमारा है।
सभी को मिल पाई बैंकिंग सुविधाएँ आसानी से,
कई सालो की महेनत का ही ये परिणाम हमारा है।

बढे रिश्तों की जमापूँजी, सफर ये यूँहीं चलता रहे।
भरोसा हम पर लोगो का, हमेशा यूँही बढता रहे।
तरक्की का सभी नव वर्ष में संकल्प लेते है,
सितारा बैंक ऑफ इंडिया का, हमेशा यूँहीं चमकता रहे।

विजयकुमार सिंधा
लिपिक
गांधीधाम शाखा
बैंक ओफ इंडिया

क्षेत्रीय राजभाषा पुरस्कार 2022-23

बैंक ऑफ इंडिया, आंचलिक कार्यालय नागपुर को क्षेत्रीय राजभाषा पुरस्कार 2022-23 के अंतर्गत पश्चिम क्षेत्र में उत्कृष्ट राजभाषा कार्यान्वयन हेतु द्वितीय पुरस्कार प्राप्त हुआ। 23 नवंबर 2023 को मुंबई में आयोजित पुरस्कार वितरण समारोह में राज्यपाल श्री रमेश बैस ने आंचलिक प्रबंधक श्री जय नारायण को शील्ड एवं गृह राज्य मंत्री श्री अजय कुमार मिश्र ने श्री राजीव कुमार, मुख्य प्रबंधक (राजभाषा) को प्रमाणपत्र प्रदान किया।

बैंक ऑफ इंडिया, आंचलिक कार्यालय एर्णाकुलम को क्षेत्रीय राजभाषा पुरस्कार 2022-23 के अंतर्गत दक्षिण-पश्चिम क्षेत्र में उत्कृष्ट राजभाषा कार्यान्वयन हेतु द्वितीय पुरस्कार प्राप्त हुआ। 19 जनवरी 2024 को बेंगलुरु में आयोजित पुरस्कार वितरण समारोह में गृह राज्य मंत्री श्री अजय कुमार मिश्र ने आंचलिक प्रबंधक श्री प्रदीप रंजन पाल को शील्ड एवं श्रीमती षीबा एस आर, वरिष्ठ प्रबंधक (राजभाषा) को प्रमाणपत्र प्रदान किया।

क्षेत्रीय राजभाषा पुरस्कार 2022-23

बैंक ऑफ इंडिया, आंचलिक कार्यालय जोधपुर को क्षेत्रीय राजभाषा पुरस्कार 2022-23 के अंतर्गत उत्तर-1 क्षेत्र में उत्कृष्ट राजभाषा कार्यान्वयन हेतु तृतीय पुरस्कार प्राप्त हुआ। 28 दिसंबर 2023 को जोधपुर में आयोजित पुरस्कार वितरण समारोह में राज्यपाल श्री कलराज मिश्र ने आंचलिक प्रबंधक श्री अजय कुमार त्रिपाठी को शील्ड एवं गृह राज्य मंत्री श्री अजय कुमार मिश्र ने श्री फतेह सिंह मीना, प्रबंधक (राजभाषा) को प्रमाणपत्र प्रदान किया।

बैंक ऑफ इंडिया के संयोजन में कार्यरत नराकास नागपुर को वर्ष 2022-23 के दौरान उत्कृष्ट राजभाषा कार्यान्वयन हेतु पश्चिम क्षेत्र के अंतर्गत नराकास राजभाषा सम्मान, द्वितीय पुरस्कार प्राप्त हुआ। 23 नवंबर 2023 को मुंबई में आयोजित पुरस्कार वितरण समारोह में राज्यपाल श्री रमेश बैस ने नराकास के अध्यक्ष श्री जय नारायण को शील्ड एवं गृह राज्य मंत्री श्री अजय कुमार मिश्र ने नराकास के सचिव श्री राजीव कुमार को प्रमाणपत्र प्रदान किया।

संसदीय राजभाषा समिति की तीसरी उप समिति का निरीक्षण

संसदीय राजभाषा समिति की तीसरी उप-समिति द्वारा दिनांक 09.01.2024 को बैंक ऑफ इंडिया आंचलिक कार्यालय, राजकोट का निरीक्षण किया गया। माननीय संसद सदस्यों की उपस्थिति में निरीक्षण सम्पन्न हुआ। बैंक ऑफ इंडिया की ओर से श्री पी. के. द्विवेदी, महाप्रबंधक, श्री मधुकर, उप महाप्रबंधक एवं आंचलिक प्रबंधक, राजकोट, सुश्री मऊ मैत्रा, सहायक महाप्रबंधक (राजभाषा) तथा श्री कन्हैयालाल, राजभाषा अधिकारी ने सहभागिता की।

संसदीय राजभाषा समिति की तीसरी उप-समिति द्वारा दिनांक 11.01.2024 को बैंक ऑफ इंडिया आंचलिक कार्यालय, अहमदाबाद का निरीक्षण किया गया। माननीय संसद सदस्यों की उपस्थिति में निरीक्षण सम्पन्न हुआ। बैंक ऑफ इंडिया की ओर से श्री पी. के. द्विवेदी, महाप्रबंधक, श्री रविशंकर, उप महाप्रबंधक एवं आंचलिक प्रबंधक, अहमदाबाद, सुश्री मऊ मैत्रा, सहायक महाप्रबंधक (राजभाषा) तथा सुश्री अंकिता टंडन, मुख्य प्रबंधक (राजभाषा) ने सहभागिता की।

पल्लबी हाल्दर सेन
(पत्नी) संजय सेन
हावड़ा अंचल